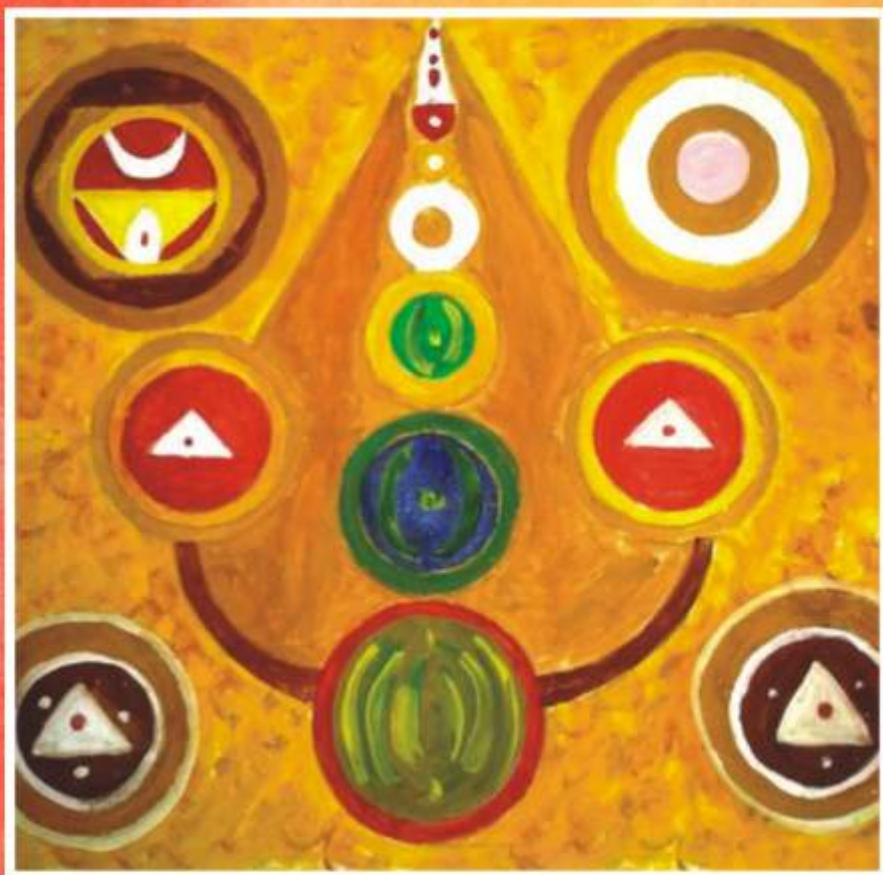


ललु वाख



तरतीब तु अनुवाद
शम्भु नाथ भट्ट 'हलीम'

ललु वाख

तरतीब तु अनुवाद
शम्भु नाथ भट्ट 'हलीम'

2016

सैंटर आफ कश्मीरी लैंगवेज लिटरेचर एंड क्लचर
आल इंडिया कश्मीरी समाज, नई दिल्ली

CKLLC Monograph Series- 2

ललु वाख

तरतीब तु अनुवाद : शम्भु नाथ भट्ट 'हलीम'

All rights reserved. No part of the book may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without prior written permission from the publisher.

© सेंटर आफ कश्मीरी लैंगवेज लिटरेचर एंड क्लचर
आल इंडिया कश्मीरी समाज, नई दिल्ली

कवर पेंटिंग : अभिनव के रैना

कम्प्यूटर लेआउट : आशा भट
88261187876

छपन सनु : 2016 ई०

मूल्य : रु 100.00

प्रकाशक

सेंटर आफ कश्मीरी लैंगवेज लिटरेचर एंड क्लचर
आल इंडिया कश्मीरी समाज, नई दिल्ली

किताब मेलनुक पता:

All India Kashmiri Samaj
C-90, Sarojini Nagar, New Delhi 110023



जु लफ़्ज़



१९९० कि व्यस्थापन पतु आव कॉशरेन ज़ेहनी तौर अख वेखुत रावन त्योल कल नलु वलनु । अमि मंज़ु नेरुन ओस महाल । चिह्न म्वछि मंज़ रँटिथ रावन त्योल ललुनावान पेयि दव तुलुन्य ।

अमापोज़ वखुत छु मददगार । यि छु शुमशान वॉरागस ति होमरावान । रावन तैल्य द्युत वारु-वारु नँविस सौंचस ज़ायुन । हालातन सुत्य आव समजोतु करनु । नवि वतु गँयि यलु, खासमर नवि पुयि हुंदि खॉतरु । तिमव कँर सख मेहनत तु तॉलीम हॉसिल कँरिथ वॉत्य कति कोर । मगर सारिवुय खोतु अगर तिमन कांह छरेर छु बासान सु छु यि जि तिम रूद्य वारु-वारु कॉशरि ज़बॉन्य, अदबु तु सकाफँच निशि दूरान ।

आल इंडिया कश्मीरी समाज छे कँशीरि नेबर कॉशरेन हुंज़ बेहबूदी खॉतरु वारयाहव वॅरियव पेटु कॉम करान । कँशीरि नेबर कॉशरि ज़बॉन्य, अदबस तु सकाफँच (संस्कृति) पोछर दिनु खॉतरु तु कॉशरि नयि पुयि अथ सुत्य ज़ॉन्याब करनु खॉतरु आव २०१२ हस मंज़ सेंटर फार कश्मीरी लेंगेज, लिटरेचर एंड क्लचर स्थापित करनु । चैमिच कॉम छे ज़रूरतु मूजूब कँशीरि नेबर कॉशरि ज़बॉन्य, अदबस तु सकाफँच पोछर द्युन । ज़बान परनावनु खॉतरु सामग्री तयार करुन्य; कॉशरि अदबुव्य खास-खास शाहकार देवनागरी कॉशरिस मंज़ पेश करुन्य, युथ जन कॉशिर नँव पुय यिम पॅरिथ कॉशरिस अदबस सुत्य ज़ॉन्ययाब सपदि तु तम्युक लुतुफ तुलि । यिथय कुन्य छे ज़रूरथ सकाफँच हुंज़ ज्ञानकॉरी ति दिन्य । सेंटर तरफु आव कॉशिर ज़बान, अदब तु सकाफत रँछरावनु खॉतरु दिलि मंज़ अख सिम्पोज़ियम करनु तु जेमि त्रेन दोहन हुंद अख सेमिनार । यथ मंज़ कॉशरि ज़बॉन्य, अदबस तु सकाफँच सुत्य वाबस वारयाहव दॉनिशवरव तु चुक्यदरव वारयाह रुत्य मशवरु दित्य । सेंटर छु २१ फरवरी माजि ज़ेवि हुंद दोह ति मनावान । यथ मंज़ कॉशिर माजि ज़ेव रँछरावनु खॉतरु बोज़शोज़ छु यिवान करनु । सेंटर छु कॉशरेन दॉनिशवरन हुंदान रुत्यन मशवरन पेट अमल करनुच कूशिश करान ।

कॅशीर छे हमेशु संतव, रेशव, पीरव-फकीरव किन्त्य वारयाह मशहूर रुज़मुच। अमी किन्त्य छु अथ रेशय-वॉर नाव प्योमुत। संतन तु रेशन हुंज़ परम्परायि पोछर दिनस मंज़ छि ज़ मशहूर नाव लल देद तु नुंद रयोश।

व्यस्थापनु पतु योस नॅव पुय या तु स्यठा कम उमरि मंज़ कॅशीरि नेबर द्रायि या यिम कॅशीरि नेबरुय जायि तु प्रेथेयि, रुद्य कॅशीरि हुंज़ि संत परम्परायि तु रेश्य परम्परायि निशि बेखबर। वखतुच ज़रूरत छे कॅशरि अदबुक्य कैह शाहकार देवनागरी-कॅशरिस मंज़ फिरिथ पेश करुन्य येमि सुत्य तिमन ताम यिहुंज़ ज्ञानकॉरी मेलि। असि छाँय नुंद रेशिन्य श्रुक्य किताब परुस।

अथ सिलसिलस मंज़ छे ललु वाख (ललु वाखन हुंज़ सॉबरन) पेश यिवान करनु। ललु वाख छि आमृत्य ब्रॉह ति अलग-अलग आयि तु मकसदु रोमन, फारसी तु देवनागरी लिपि मंज़ छापनु। वारयाहव ऑलिमव छे यिहुंज़ पनुनि पनुनि आयि वखनय ति कॅरमुच। यि सॉबरन छे तरतीब दिचमुच श्री शम्भु नाथ भट्ट 'हलीम' सॉबन। यिमव छु ललु वाखन हुंद तर्जमु सलीस हिंदीयस मंज़ कोरमुत। ललु देदि मुतलख छु डॉ० रूपकृष्ण भट सुंद अख लेख ति ऑखरस पेठ दिनु आमुत। मे छे ब्वमेद ज़ि परनवॉल्य करन यिम ललु वाख परुन्य पसंद। सॉन्य नॅव पुय हेकि पनुन्यन ज़िठ्यन हुंदि मदतु सुत्य यिम ललु वाख आसॉनी सान पॅरिथ तु समजिथ।

प्रो० ओमकार एन० कौल

चियरमैन,

कश्मीरी लैंग्वेज, लिटरेचर एंड क्लचर

1

आमि पनु सँदरस नावि छस लमान
कति बोज़ि दय म्योन मेति दियि तार
आमेन बानन पोन्य ज़न शमान
दिल छुम ब्रमान गरु गछु हा

सागर में कच्चे धागे (की सहायाता) से मैं नैया खींच रही हूँ। दर्ई (ईश्वर) मेरी सुने। मुझे भी पार लगा दे। मेरी दशा उस कच्चे मृन्पात्रों (मिट्टी के बर्तनों) की सी है, जिनमें सदैव पानी पचता रहता है। मेरा जी कर रहा है, अपने घर (स्वधाम) को चली जाऊँ।

2

आयस वते गेयस नु वते,
सुमन स्वथि मंज़ लूस्तुम दोह ।
चन्दस वुछुम तु हार नु अते,
नावु तारस दिमु क्या बो ।।

(मैं) सीधी राह (जनपथ) से आई, पर सीधी राह से लौट न पाई। अभी सेतु के बीच ही जा रही थी कि इतने में दिन ढल गया। जब मैं हाथ डाल कर देखा तो उसमें एक कौड़ी भी न थी। अब बताओ, पार-तरावा दूँ तो क्या दूँ।

(अर्थभेद) सीधी राह से आई, पर लौट न सकी उसी राह से। मन-रूपी बाँध (सेतु) से जा रही थी कि दिन ढल गया। भीतर झाँका तो हर (शिव) का नाम साथ न पाया। कहिए, तब पार तरावा क्या दूँ?

3

नाबुघ बारस अटुगंड ड्योल गोम,
देह-काण होल गोम ह्यकु क्यहो ।
गवरु सुन्द वनुन रावन-त्योल प्योम,
पाहलि-रुस्त ख्योल गोम ह्यकु क्यहो ।

(मेरे कंधे पर के) पराशों की गठड़ी (सांसारिक सुख-संपदाओं) की रस्सी की गांठ ढीली पड़ गई। देह कमान के सदृश झुक गई। (अर्थभेद: दिन का काम-काज ही सारा बिगड़ गया। यह भार वहन करूं तो कैसे?)

गुरु-शिक्षा की ऐसी कड़ी चोट लगी कि जो कुछ (प्रिय) था, सब खो गया। रेवड़ गड़रिये के बगैर रह गया। कैसे इस बोझ को वहन करूं?

4

हचिवि हॉरिजि प्यचिव कान गोम,
अबख छान प्योम यथ राजधाने ।
मंजबाग बाज़रस कुल्फु-रुस वान गोम,
तीर्थु-रुस पान गोम कुस मालि ज़ाने ।।

काठ के धनुष को घास का बाण बना। इस राज-महल के (निर्माण के) लिए बढ़ई मिला तो वह भी मूर्ख। भरे बाजार में मेरी दूकान ताले के बिना रही। देह मेरी तीर्थ विहीन रही। कौन यह मेरी बेबसी समझे!

5

ललिथ-ललिथ वदय बब वाय,
चिन्ता मुहुच प्ययी माय ।
रोज़ी नो पतु लोह-लंगरुच छाय,
निज़-स्वरूप क्या मोटुय हाय ।।

री लल्ला ! धीरे-धीरे रुदन-विलाप करती रहूँगी तेरी दशा पर ! हे चित्त,
तुझे मोह-माया ने अभिभूत किया है । लोह-लंगर (भौतिक वैभव) की छाया
तक तेरा साथ न देगी । हा ! तू निज स्वरूप को क्यों भुला बैठा !

6

हा चैता कवु छुय लोगमुत परमस,
कवु गोय अपज़िस पज़्युक ब्रॉंत ।
दुशि-बोज़ वश कोरनख पर-धर्मस,
यिनु गछनु ज्यनु-मरनस क्रोन्त ।।

हे चित्त ! तू औरों की ओर क्यों आसक्त हुआ है ? क्यों झूठ में सच की
भ्रॉंति हई तुझे ? (तुम में) बुद्धि की कमी है, जिसने तुझे पर-धर्म के वश कर
रखा है । (जभी तो) तू आवागमन और जन्म-मरण के जाल में उलझा हुआ है ।

7

तलु छुय ज्युस तय प्यठु छुख नचान,
वन तु मालि मन क्यथु पचान छुय ।
सोरुय सौंबरिथ येति छुय म्वचान,
वन तु मालि अन क्यथ रोचान छुय । ।

तेरे नीचे गढ़ा है और (उसके) ऊपर तू नाचता है। बला बता, तेरा मन (इस स्थिति पर) विश्वास कैसे कर रहा है। सब कुछ बटोर कर यही छोड़ना पड़ता है। तो यह बता तुझे फिर (अन्न) कैसे रुचता है।

8

क्या करु पांचन देहन तु काहन,
व्वक्षुन यथ लेजि यिम कॅरिथ गॅय ।
सौरिय समुहान यथ रजि लमुहान,
अदॅ क्याजि राविहे काहन गाव । ।

पांच (तत्त्व) दस (इन्द्रिय) और ग्यारह (मनसहित इन्द्रि-समुह) को क्या करूँ। (ये सब) मेरी हण्डिया खाली कर गए। यदि सब रस्सी को (एक साथ) खींचते तो फिर (ये) ग्यारह इस गौ को नहीं खो बैठते। अर्थात्, इन्द्रियों और मन की विक्षिप्त दशा आत्मा को कहीं की रहने नहीं देती। जैसे ग्यारह स्वामियों की धेनु अपनी-अपनी ओर खिंचे जाने से कहीं की नहीं रहती।

9

दललु कलस बलगस दूर कर गॉसलल,
अदु द्यवु फवललल यँबर्जुवल बलग।
मॅरलथ मंगनय वुगुरल हँज हॉसलल,
मोत छुय पतु-पतु तहसीलदलर।।

मन-रूपी उदुडलन से सब खरपतवलर (कूडल- ककरल) हटल दे तब कहीं नरुगलस के सुमनों कल उपवन पुषुडलत हलग। मृतुयु के उपरलंत तुडुडसे उडुर भर की उपलडुधल की मलंग हलग, मलनो मौत तहसीलदलर की तरह तेरे पीछे पडुडी है।

10

आयस कमल दीशल तु कमल वते,
गछु कमल दीशल कवु जलन वथ।
अनुतल दलय ललगलय तते,
छँनलस पवकस कलंछ तल नो सथ

कलस दलशल और कलस रलह से आई हूँ, कलस दलशल से जलनल है-यह सब में कैसे जलनू। मुडुडे रलह सूडुडे तो कैसे। अनुततः यदल मुडुडे सतुपरलमरुशु मलले तो कलतनल अछुछल हो क्युंकी वही मेरे कलम आने वललल है। मलतुर शुवलस पर कुुई आसुथल नहीँ।

11

अछ्यन आय तु गछुन गछे,
पकुन गछे द्यन क्यो राथ ।
योरय आय तु तूर्य गछुन गछे,
कैह नतु कैह नतु कैह न तु क्याह ।।

हमारा आगमन अविच्छिन्न रहा और निरन्तर हम आकार जाते रहे। (आवागमन का) यह कम अहोरात्र चलता रहेगा। जिस जगह से (इस प्रकार) हम आते रहे, वहीं हमारा जाना बराबर बना रहेगा। इस (चक्र) में यदि कोई रहस्य निहित नहीं, तो यह सब कुछ निरर्थक है क्या ?

12

युह यि करुम करि प्यतरुन पानस,
अर्जुन-वर्जुन ब्ययिस क्युत ।
अन्ति लागि रोस पुशिरुन स्वात्मस,
अदु यूर्य गछि तु तूर्य छुम ह्योत ।।

जो भी कर्म में करुं उसको पूर्ण करने का भार मुझे ही वहन करना है; किन्तु (उस) कर्मफल के अर्जन और बटवारे में औरों का भाग है। यदि अन्त में निस्पृह होकर मैं कर्मफल स्वात्मार्षण करुं, तो जहाँ कहीं भी मैं जाऊँ वही मेरे लिए हितकर होगा।

13

ग्वरस प्रुछुम सासि लटे,
यस नु कैह वनान तसु क्या नाव ।
प्रुछान प्रुछान थँचिस तु लूसुस,
कैहनस निशि क्याह ताम द्राव ।।

गुरु से हज़ार बार पूछा कि जो अनिर्वचनीय है, उसका क्या नाम है। पूछते-पूछते मैं थककर हार गई, अस्त हो गई। (यही समझा) कुछ है, जो इस सारे अनाम का मूल (आदि-स्रोत) है।

14

ग्वरन वोननमु कुनुय वचुन,
न्यबरु दोपनम अंदर अचुन ।
सुय गव ललि मे वाख तु वचुन,
तवय मे ह्योतु नंगय नचुन ।।

गुरु ने मुझे एक ही वचन की दीक्षा दी कि बाहर से भीतर को जा (अन्तर्मुख हो जा)। वही वाक्य था, वही वचन था जो मुझ लल्ल का पथदर्शक और प्रेरक बना। तभी मैं मस्त दिगम्बर अवस्था में नाचने लगी।

15

राजस बाँज्य येम्य करतल त्याजि,
स्वर्गस बाँज्य छुय तफ़ तय दान ।
सहजस बाँज्य येम्य ग्वर-कथु पाँजि,
पाप-पोन्य बाँज्य छुय पननुय पान ।।

जो तलवार का धनी बना वह ताज्य का भागीदार बना । जिसने तप और दान अपनाए, वह स्वर्ग का अधिकारी बना । जो गुरु वचनों का पालन करता रहा वह सहज स्वरूप की पदवी पा गया अर्थात् वह आत्म-साक्षात्कार के चरम लक्ष्य तक पहुंचा । मनुष्य अपने पाप-पुष्य का भागीदार आप है ।

16

हा मनशि ! क्याजि छुख वुठान सेकि-लवर,
अमि रटि हा-मालि पकिय नु नाव ।
ल्यूखुय यि नारॉन्य कर्मनि रुखि,
ति मालि हेकिय नु फिरिथ कांह ।।

हे मानव, रेत की रस्सियाँ क्यों बटता है । इस तरह, हे भारवाहक, तेरी नाव आगे जा सकती या इस रेखा से, भलेमानस, तेरी नैया अग्रसर नहीं हो सकती ! तेरी कर्म-रेखा पर जो कुछ नारायण लिख गए, कोई बदल नहीं सकता ।

17

ज्ञान-मार्ग छय हाकु-वॉर,
दिजेस शम-दम क्रयिक्य चैन्य,
लामाचक्रु पोश प्रॉन्य क्रयि-दॉर,
ख्यनु ख्यनु म्वचिय वॉरुय छैन्य ।।

ज्ञान-मार्ग शाक-वाटिका है, इसके चारों ओर शम, दम और सत्कर्म भाड़ लगा। इस प्रकार तेरे पूर्व कर्मों का फल उस पशु-बलि की तरह चुक जायेगा, जो साग-पात खा कर देवी की भेंट चढ़जाता है। निरन्तर साग खाते रहने से ही वाटिका साग-पात खा कर देवी की भेंट चढ़जाता है। निरन्तर साग खाते रहने से ही वाटिका खाली हो जाएगी।

18

गॉफिलो हुकु कदम तुल,
वुनि छय सुल तु छांडुन यार ।
पर कर पॉदु पर्वाज तुल,
वुनि छय सुल तु छांडुन यार ।।

ऐ गाफिल, तेज-तेज कदम बढ़ा, अभी समय है। अपने मित्र को तलाश कर। पंख पैदा कर कि तुझे उड़कर जाना है। अभी समय है, अपने मित्र को ढूँढ़ले।

19

दमन बस्ति दितो दम,
तिथय यिथु दमन खार ।
शस्त्रस स्वन गछी हॉसिल,
वुनि छय सुल तु छंडुन यार ।।

जिस प्रकार लुहार धौंकनी हवा भर कर लोहे को (अपनी इच्छानुसार) आकार में ढाल लेता है, उसी तरह तू भी शरीर रूपी धौंकनी में प्राणायाम की विधि को अपना ले। इस क्रिया से लोहा स्वर्ण में परिणत होगा। अभी समय है अपने यार (ईश्वर) को तलाश कर।

20

दिहचि करि दारि-बर त्रोपरिम,
प्रानु-चूर रोदुम तु द्युतमस दम ।
हृदयिचि कूठरि अंदर गौंडुम,
ओमकि चोबक तुलमस बम ।।

देह-रूपी मकान के द्वार-झरोखे मैंने बंद कर दिए, और प्राणरूपी चोर को पकड़कर भागने से रोका। फिर हृदय की कुटिया में उसको बांध कर रखा और ओम के चाबुक से उसको खूब पीटा (जिससे सहज नाद गूंज उठा)।

21

चेतु तुरुग वगि ह्यथ रोदुम,
चेलिथ मिलविथ दशि-नाडि वाव ।
थवै शशिकल व्यगलिथ वॅछुम,
शुन्यस शुन्या मील्लिथ गव ॥

चित-रूपी घोड़े को लगाम देकर थाम लिया । यत्न-पूर्वक (प्राणाभ्यास) द्वारा दशनाडियों के श्वासोच्छ्वास को बांध लिया । तब कहीं शशिकला पिघली और (मेरे पार्थिव) शरीर में उतर आई, और शून्य में शून्य विलीन हो गया ।

22

पवन पूरिथ युस अनि वगि,
तस ना स्पर्शि ब्वच्छि तु न त्रेश ।
ति यस करुन अन्ति तगि,
संसारस सुय ज्ययि नेछ ॥

जो प्राणों को पूरक (भीतर खींचने के) द्वारा नियंत्रित करे, उसको न भूख रूपर्ष करेगी न प्यास । जो अन्त तक यह (प्राणायाम विधि) कर सके, इस संसार में (भगवान) का जीना सार्थक है ।

23

चेतु तुरुग गगनु भ्रमु-वोन,
निमिशु अकि छडि यूजन लछ ।
चेतनि वगि ब्वदि रँटिथ ज़ोन
प्राण-अपान संदौरिथ पखुच । ।

चित-रूपी अश्व गगन-चारी है। एक निमिष में लाखों योजन घूम आता है। जिसने बुद्धि और विवेक रूपी लगाम से इसको थामना सीख लिया, वही प्राण-अपान के चक्रव्युह को नियंत्रित करने में सफल होता है।

24

ज़ानुहा नाडि दल रँटिथ,
चँटिथ वँटिथ कुटिथ क्लीश ।
ज़ानुहा अदु अस्तः रसायन गटिथ,
शिव छुय कूठ तु चेन व्वपदीश । ।

यदि मैं मन से नाड़ि-दल को नियंत्रित करना जानती, यह जानती कि उन्हें कैसे काटूं और समेटूं तो मुझे भी क्लेशों के निवारण की विधि आ जाती। और तब कहीं मुझे रसायन घोटने (आत्म ज्ञान) का अनुभव होता। शिव का पाना कठिन है, यह उपदेश ध्यानपूर्वक सुन ले।

25

शलशलरस वुथ कुस रते,
कुस बबके रटल वलव ।
युस डलंछ इनुदुरल चेललथ च़टे,
सुय रटल गटे रव ॥

शलशलर डें (छत से चूने वलली) टडकन कु कौन रोक सकतल है ? हवल कु मुट्टी डें कौन डकड़ सकतल है ? कु डलंछ इंदुरल कु सडेट कर उनुं कूट कर रखे, वही अनुधेरे डें डुरकल डल सकतल है ।

26

अकुय ऑंकर युस नलडल दरे,
कुडुडुडु डुरहुडलंडस सुड गरे ।
अख सुय डनुथर च़तस करे,
तस सलस डनुथर क्यल करे ॥

एक ऑंकर (कड) कलसकु नलडल से नलकल कर कुडुडुडु दुरल डुरहुडलंड से कल डले और यही एक डनुतुर कलसके डन-डुरलण डें डस कलए, उसकु सुहतुर डनुतुर कु कलड की क्यल कुरुरत । अरुथलत उसके ललए अनुय डनुतुर डेकर हैं ।

27

दमाह दम कोरमस दमन हाले,
प्रजल्योम दीफ़ तु ननेयम ज़ाथ ।
अँद्रिम प्रकाश न्यबर छोटुम ।
गटि रोदुम तु वॅर्मस थफ ॥

मैं क्षण-प्रतिक्षण कुम्भक द्वारा प्राण-निरोध करती रही। इस (अभ्यास) से मेरे अन्तर में (ज्ञान) दीप प्रज्वलित हुआ और मैं अपनी यथार्थ सत्ता जान गई। मैंने अन्तर्प्रकाश बाहर प्रकट किया और अंधेरे में उसे पकड कर रखा।

28

च़ालुन छु वुज़मलु तु त्रटै,
च़ालुन छु मन्दिन्यन गटकार ।
च़ालुन छु पान पनुन कडुन ग्रटै,
ह्यतु मालि सन्तूश वाती पानै ॥

सहिष्णुता बिजली और वज्रपात है, सहिष्णुता मध्याह्न में अंधकार का फैल जाना है। सहनशीलता अपने आपको चक्की में पीसना है। यदि तू संतोष करेगा तो वह स्वयं मिल जाएगा।

29

लतन हुंद माज़ लारयोम वतन,
अँकिय हॉवनम अकिचिय वथ ।
यिम-यिम बोज़न तिम कोनु मतन,
ललि बूज़ शतन कुनिय कथ ॥

मेरे तलवों का माँस सड़कों से चिमट गया । अर्थात् सत्यान्वेषण में मुझे विविध कष्ट सहने पड़े । (अन्त में) एक ही ने एकत्व का मार्ग-दर्शन कराया । जो-जो यह (तत्त्व) सुनें, क्यों न वे मतवाले बन जाएं । लल्ला ने सौ बातों की एक बात सुन ली ।

30

ट्योठ मोदुर तय म्यूठ ज़हर,
यस यूत छुनुख जतन बाव ।
यँम्य यथ कँरुय कल तु क़हर,
सु तथ शहर वॉतिथ प्यव ॥

कड़वा मीठा और मधुर विष । जो जितना जतन कर सका तथा जिसने जिस (लक्ष्य को पाने) की एक-निष्ठा से आराधना की, वह उस उद्देश्य को पाने में सफल हुआ ।

31

मनु-मनु गॅयस बो तस कुनुय,
बूजुम सतुच घंटा वजान ।
तथ जायि धारणायि धारण रॅटुम,
आकाश तु प्रकाश कोरुम सरु । ।

तन-मन से मैं उसके ध्यान में रही । मैंने सत्य की घंटी बजते सुनी । वहाँ (उस स्थिति में) मैंने धारणा को धारण किया, तब मुझे आकाश और प्रकाश का तत्व ज्ञान हुआ ।

32

कवु छुख दिवान अनिने बछ ।
त्रुख हय छुख तु अन्द्रुय अछ ।
शिव छुय अँत्य तय कुन मो गछ,
सहज कथि म्यानि करतो पछ । ।

क्यों अन्धे की तरह इधर-उधर (निरर्थक) हाथ-पैर मार रहा है ? यदि तू बुद्धिमान है तो अन्तर्मुख हो जा । शिव वहीं (भीतर) है, तुझे कहीं भी जाने की आवश्यकता नहीं । मेरी सहज-स्वाभाविक बातों पर भरोसा कर ।

33

अथु मबा त्रावुन खर बा,
लूकु हुंज क्वंग वॉर खेयिय ।
तति कुस दारी थर बा,
यति नॅनिस करतल पेयिय ॥

अपने हाथ से गधे को जाने न दे । यह लोगों की केसर-वाटिका चर लेगा ।
वहाँ कौन तेरे बदले दषड भुगतेगा, जब तुझ निहत्थे पर तलवार की मार
पड़ेगी ।

34

लल बो लूसस छाँड़ान तु गारान,
हल मे कोरमस रसॅनि शतिय ।
वुछुन द्युतमस तौर्य डीठिमस बरन,
म्य ति कल गनेयि ज़ोगमस तॅतिय ॥

मैं लल्ला दूढते-खोजते थक-हार गई । मैंने अपने बूते (सामर्थ्य) से
बढ़कर भी जोर लगाये । अब जिज्ञासा पूर्वक उसकी ओर ताकने लगी तो देखा,
उसके किवाड़ों पर कुंडी लगी है । मेरी जिज्ञासा और भी बढ़ गई और मैं वहीं पर
उसकी ताक में बैठी रही ।

35

मलु व्वन्दि ज़ोलुम,
जिगर मोरुम ।
तेलि लल नाव द्राम,
येलि दॅलि त्रॉविमस तॅतिय ।।

मैंने मन का सारा मल जला दिया । जिगर (इच्छाएं) मार कर बैठी । जब मैं आँचल पसार कर (विनयपूर्वक) उनके द्वार पर ही जमकर बैठ गई, तब मेरा लल्ला नाम प्रसिद्ध हुआ । अर्थात् तब साध पूर्ण हुई ।

36

लल बो द्रायस लोलु रे,
छांडान लूसुम द्यन क्यो राथ ।
बुछुम पॅडिथ पननिय गरे,
सुय मे रोटमस न्यछतुर तु साथ ।।

मैं लल्ला प्रीत की मतवाली सत्य की खोज (सत्यान्वेषण) को निकल पड़ी । दूँढते-खोजते दिन ढला, राते बीतीं । अन्ततः देखा तो पण्डित (इष्ट) मेरे अपने घर में ही था । वही शुभ मुहूर्त मैंने किया अर्थात् अन्तर्मुख होकर ही मैं उससे तादात्म्य प्राप्त कर सकी ।

37

छाँडान लूसस पॉन्य पानस,
छेपिथ ज्ञानस वोतुम नु कांह ।
लय कॅरमस तु वॉचुस अलु-थानस,
बॅर्य बॅर्य बानु तु चवान न कांह ।।

मैं अपने (स्व) को ढूँढते-ढूँढते थक-हार गई। परन्तु इस प्रकार छिपे हुए ज्ञान (रहस्य) को भला कोई माप सकता है ? जब मैं 'स्व' में विलीन हो गई तब मैं 'अलथान' (ज्ञान-रूपी मधुशाला) में पहुंची जहाँ मधु-चषक भरे पड़े हैं, पर कोई पीता नहीं।

38

सहजस शम तु दम नो गछे,
यछि नो प्रावख मुक्ति-द्वार ।
सलिलस लवण ज़न मीलित्थ गछे,
तोति छुय दुर्लभ सहज व्यचार ।।

सहज (आत्मसाक्षात्कार) के लिए शम एवं दम की आवश्यकता नहीं। मात्र चाहने से तू मुक्ति-द्वार प्राप्त नहीं कर सकता। (यदि) सलिल (जल) में लवण सदृश मेल भी हो, तो भी सहज-विचार दुर्लभ है।

39

मूढो क्रय छय नु धारुन तु पारुन,
मूढो क्रय छय नु रछिन्यु काय ।
मूढो क्रय छय नु दीह संदारुन,
सहज व्यचारुन छुय व्वपदीश ॥

हे मूढ! कर्तव्य कर्म व्रत-धारण और साज-सज्जा नहीं। न ही मात्र काया की रक्षा कर्तव्य कर्म है। भोले मानव! देह की सार-संभाल ही कर्तव्य कर्म नहीं। सहज-विचार (आत्मतत्त्व चिन्तन) वास्तविक उपदेश है।

40

चलचित्त व्वन्दस भय मो बर,
चोन चिन्थ करान पानु अनाद ।
च्य को-जन्यु खयोद हरि, कर,
कीवल तसुन्दुय दारुक नाद ॥

हे चंचल चित्त! भय से आक्रान्त न हो। अनादि स्वयं तुम्हारी चिन्ता कर रहा है। तुझे क्या मालूम, तेरी क्षुधा (भूख) वह कब दूर कर दे। केवल उसी (ओम) का हर पल जाप करता रह।

41

दीव वटा दीवर वटा,
प्यटु-ब्वनु छुय ईकवाठ ।
पूज कसव करख हूट बटा,
कर मनस तु पवनस संग्गाठ ।।

देव भी पत्थर है, और देवल (मंदिर) भी पत्थर । ऊपर नीचे सर्वत्र एक-सी पाषाणमय स्थिति है । हे पंडित, तू किसकी पूजा करेगा ? मन और पवन (प्राण) को एक-साथ मिला दे । अर्थात् प्राणायाम की विधि से चित्तवृत्तियों का निरोध कर ।

42

कुस पुश तय क्वस पुशाँनी,
कम कुसुम लॉगिजेस पूजे ।
कमि सृत्य गोड़ दिजेस जलदाँनी,
कव सन मन्त्रु शंकर स्वामी वुजे ।।

कौन माली है और मालिन कौन ? कौन कुसुम उसकी पूजा के योग्य हैं । किस जल से उसका अभिषेक करना है ? और कौन-सा मंत्र है वह, जिससे स्वात्म-शंकर निज-स्वरूप का साक्षात्कार करा दे ?

43

मन पुश तय यछ पुशॉनी,
भावकि कुसम लॉगिजेस पूजे ।
शशि-रस गोड़ दिजेस ज़लदॉनी,
छवपि मंत्र शंकर स्वात्म वुजे । ।

मन माली है और जिज्ञासा मालिन । भाव-कुसुमों से उसकी पूजा करना । शशिरम (अमृत जल) से उसका अभिषेक करना । मौन होकर मंत्र जाप करने से स्वात्म-शंकर उदबुद्ध होगा ।

44

कुश पोश तेल दीफ ज़ल ना गछे,
सद्भावु गवरु कथ युस मनि हेये ।
शम्भूहस स्वरि न्यत पननि यछे,
सोय दपिजे सहजा क्रिय न ज़ेये । ।

(साधना के लिए) कुशा, पुष्प, तिल, दीप और जल की कोई आवश्यकता नहीं । सद्भाव से जो गुरु-वचन मन में धारण करे और नित्य श्रद्धा से शम्भू का स्मरण करे, वह सहज-सनातन आनन्द में विलीन होकर कर्म-बंधन से रहित हो मोक्ष प्राप्त करता है ।

45

लज्ज कासी शीत न्यवारिय,
तृण जल करान आहार ।
यि कॅम्य व्वपदीश कोरुय बटा,
अच्चीतन वटस सच्चीतन द्युन आहार ॥

यह तेरी लज्जा को ढकने वाली है, और शीत से तुम्हें बचाती है। तृण और जल इसका आहार है। हे मूर्ख पंडित, यह किसने कहा है कि अचेतन (निर्जीव) पत्थर को तू सचेतन (जीव) खाने को दे।

46

प्रथ तीर्थन गछान संन्यॉस्य,
गारान स्वदर्शन म्युल ।
च्चेता पॅरिथ मो निष्पथ आस,
डॅशख दूरे द्रमुन न्यूल ॥

संन्यासी प्रत्येक तीर्थ को जाता है ताकि कहीं स्वात्म-दर्शन का लाभ हो। चित्त, पढ़-लिखकर भी निष्पथ (मार्गहीन) न हो। दूर से देखने पर दूब हरी दिखती है। अर्थात् दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

47

शिव वा कीशव वा जिन वा,
कमलजनाथ नामधारिन युह ।
मे अबलायि कॉसितन भव-रुज़,
सु वा सु वा सु वा सुह ।।

शिव हो, केशव हो या जिन (महावीर स्वामी) हो, अथवा कमलजनाथ (गौतम बुद्ध) हो। उसका जो भी कुछ नाम हो—मुझ अबला को भवरुज (संसार की व्याधियों) से मुक्त कर दे— चाहे वह कुछ भी कहलाए।

48

बुथि क्या जान छुख व्वन्दि छय वॅन्त्य,
असलुच कथ ज़ांह सॅनिय नो ।
परान लेखान वुठ ऑगुज गॅजिय,
अँद्रिम दुई ज़ांह चॅजिय नो ।।

देखने में कितना सौम्य है, (परन्तु) दिल तेरा पत्थर (कठोर) है। सत्य की बात (मूल तत्त्व) तुझे कभी भाई नहीं। पढ़ते-लिखते तेरे होंठ और उंगलियां घिस गईं, (किंतु) अन्तर की दुई (दुविधा) गई नहीं।

49

परान-परान ज़ेव ताल फॅजिम,
चे युग्य क्रयु तॅजिम नु ज़ांह ।
सुमरन फिरान न्योठ तु ऑगुज गॅजिम,
पनन्य दुई मालि चॅजिम नु ज़ांह ।

पढ़ते-पढ़ते मेरी जीभ और तालू जीर्ण-शीर्ण हुए। मगर तेरे योग्य कर्तव्य-कर्म की विधि कभी मेरी समझ में न आई। सुमरनी (माला) फेरते हुए अंगूठा और अंगुलियां गल मई, पर आह! मन की दुई फिर भी न मिटी।

50

दॅछिनिस ओब्रस ज़ायुन ज़ानहा,
सोदरस ज़ानुहा वॅगडिथ अठ ।
मॅदिस रूगियस वैद्युत ज़ानहा,
मूडस ज़ॉनिम नु वॅनिथ कथ ।।

जलभरे मेघों को छिन्न-भिन्न करना सुगम था, समुद्र से संपूर्ण जल उलीचना संभव था, असाध्य रोगी की चिकित्सा भी हो सकती, (किंतु) मूढ़को बात समझा न सकी।

51

चरमन चॅटिथ दितिथ पॅन्य पानस,
त्युथ क्या वव्योथ तु फलिही सोव ।
मूड़स व्वपदीश गय रीज़ि दुमटस,
कॅन्य दांदस गोर आपरिथ रोव ।।

चर्म काटकर तूने अपने चारों ओर खूँटे गाड़ उसकी बाड़ फैला दी है ।
ऐसा कौन-सा बीज बोया था, जो उग कर कुछ फल दे देता । मूर्ख को उपदेश
करना गुंबज पर कंकर फेंकना है, भूरे बैल को गुड़ खिला कर उससे व्यर्थ ही
दूध की आशा रखना है ।

52

अव्यस्तॉर्य पोथेन छि मालि परान
यिथु तोतु परान राम पंजरस ।
गीता परान तु हीथा लबान,
पॅरुम गीता तु परान छेस ।।

विचारहीन (मूर्ख) लोग धर्म-ग्रंथों को उसी प्रकार बांचते रहते हैं, जिस
प्रकार पिंजरे में तोता राम-राम की रट लगाता है । (ऐसे लोगों के लिए) गीता-
पाठ मात्र एक बहाना है (दिखावा) । गीता मैंने पढ़ी और पढ़ती हूँ, अर्थात् धर्म
का अनुसरण करने का यत्न करती हूँ ।

53

परुन स्वलभ, पालुन द्वर्लभ,
शहज गारुन सिखिम तु कूठ ।
अभ्यासकि गनिरय शास्त्र मोदुम,
चीतन आनन्द निश्चय गोम ।।

पढ़ना सुलभ है, पर उसका पालन करना दुर्लभ है। सहजान्देषण (स्वात्म की खोज) सूक्ष्म और कठिन है। अभ्यास के घनेरे (गुंजलक) में सब शास्त्र भूल बैठी। दृढ़निष्ठा के बल पर फिर भी मुझे चेतन-आनन्द की प्राप्ति हुई।

54

परुन पोलुम अपोरुय रोवुम,
केसर वनु वोलुम रँटिथ शाल ।
परस प्रनुम तु पानस पोलुम,
अद् गोम मोलूम तु ज़ीनिम हाल ।।

जो पढ़ा उसका पालन किया, जो पढ़ने में न आया था, वह खो दिया। मैंने वन से सिंह को सियार की तरह पकड़ पर काबू किया। जो शिक्षा मैंने औरों को दी, उसका पहले स्वयं पालन किया। तब कहीं मुझे ज्ञान-प्राप्ति हुई और मैंने लक्ष्य साध लिया।

55

मन्दछि हाँकल कर छैन्यम,
येलि हेडुन गेलुन असुन प्रावु
आरुस जामु कर सन दज्यमु,
येलि अँद्रयुम खार्युक रोज्यम वारु । ।

लाज की सांकल कब टूट जाएगी ? जब औरों के उलाहनों, छेड़ और हंसी-मखौल को सहन करूंगी । लज्जा का यह आवरण कब जल जाएगा ? जब अन्तर्मन का स्वच्छंद घोड़ा (चंचल मन) सध कर नियंत्रित रहेगा ।

56

रुत तु क्रुत सोरुय पजेम,
कनन नु बोजुन अँछन नु बावु
ओरुक दपुन येलि व्वन्दि वुजेम,
रत्न-दीप प्रजलेम वर्जनि-वावु । ।

बुरा-भला सब मुझे सहन करना चाहिए । मेरे कान (बुरा) सुन पाएं, न मेरी आँखों में (दुर्भाव) दीखे । जब मेरे अन्तर्मन से उधर का आह्वान (स्वात्म-आह्वान) उदबुद्ध हो तब अकिंचनता के अंधेरे में भी रत्नदीप प्रज्वलित होगा ।

57

गाल गँडिन्यम बोल पँडिन्यम,
दँपिन्यम ती यस यि रोचे ।

सहज कुसमव पूज कँरिन्यम,
बो अमलॉन्य तु कस क्या मोचे । ।

कोई मुझे गाली दे या बुरा-भला कहे । जो जिसको रुचे, वही मुझे कहे ।
कोई सहज (सद्भाव) कुसुमों से मेरी पूजा करे, मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा,
क्योंकि मैं अमलिन हूँ । ऐसी स्थिति में किसी को क्या मिलता है ?

58

ल्यकु तु थोकु प्यठ शेरि द्याचँम,
न्यन्दा सपनिम पथ ब्रॉठ तान्य ।

लल छेस कल ज़ांह नो छेनिम,
अद् येलि सपनिस व्यपिहे क्याह । ।

मैंने गाली-गलौच और थूक-फिटकार शिरोधार्य कर ली । अतीत से अब तक मेरी निन्दा होती रही । मैं लल्ला हूँ और मेरी निष्ठा और एकाग्रता में कभी व्यवधान न पड़ा । जब उपलब्धि का घट पूर्ण हुआ तो उनमें अन्य कुछ समाए कैसे ?

59

आंसा बोल पॅडिन्यम सासा,
मे मनि वासा खीद ना हिये ।
ब्व योद सहज शंकर भँक्च आसा,
मुकरिस सासा मल क्या पेये ।।

कोई मुझे हजार गालियां क्यों न दे, मेरे मन में इसका तनिक भी खेद नहीं है। यदि मैं सहज (स्वात्म) शंकर की भक्त हूँ, तब दर्पण पर राख की मैल कभी नहीं जम सकेगी।

60

मूढजॉनिथ, पॅशिथ ति कोर,
कोल श्रुतवोन, जड़ रूफ आस ।
युस यि दपी तस ती बोल,
योहय तत्व-व्यदिस छु अभ्यास ।।

जानते हुए भी मूढ(भोला) बन, देखते हुए चक्षुहीन। सुनते हुए गूंगा, जड़ रूप धारण कर। जो कोई तुमसे जो कुछ कहे, उसकी वही बात कह दे। तत्त्वविद का यही अभ्यास है।

61

कन्द्यो ! करख कंदि कंदे,
कन्द्यो ! करख कंदि विलास ।
भूगय मीठि दित्थि यथ कंदे,
अथ कंदि रोज़ि सूर न त सास । ।
स्वमन गारुन मंज़ यथ कन्दे,
यथ कंदि दपान स्वरूप नाव ।
लूभ मोह च़लिय शूब यियी कन्दे,
येथ्य कंदि तीज़ तय सौर प्रकाश । ।

हे शरीरधारी मानव ! यदि तू सदैव तन बदन की ही चिंता करता रहेगा, तन की ही साज-सज्जा में रत रहेगा और भोग-ऐश्वर्य से यदि तू इस तन को चूमता रहेगा, तो ऐसा समय आएगा, जब इसकी राख तक शेष न रहेगी । (तुम्हें चाहिए कि) इस तन में सच्चे मन से उसकी खोज कर जिसके कारण इस शरीर को सुरूप (रूपवान) कहा जाता है । लोभ-मोह जब मिट जाएगा तो यह तन सुशोभित होगा और तेज एवं सूर्य-प्रकाश से भासमान होगा ।

62

यवु तुर चलि तिम अम्बर ह्यता,
ख्योद यवु गलि तिम आहार अन ।
चिता स्व-पर व्यचारस पेता,
चन्तन यि दीह वन-कावन ।।

वह वस्त्र धारण कर ले, जिनसे ठंड दूर होगी । जिससे क्षुधा मिट जाए, वह आहार कर । हे चित्त ! स्व (स्वात्म) और पर (परमात्म) का विचार कर । चिन्तन कर ले, यह देह अन्ततः वन्य कागों का आहार है ।

63

नफसुय म्योन छुय होस्तुय,
अँम्य हँस्त्य मॉगनम गरि गरि बल ।
लछि मंज सासु मंज अखा रोस्तुय,
नत्तु दितिन सॉरिय तल ।।

मेरा यह लोभी मन (पेटू) हाथी है । इस हाथी ने हर घड़ी बल मांगा है । इसके चंगुल से हजारों-लाखों में से एकाध बचा हो तो हो, अन्यथा इसने सबको पददलित कर दिया है ।

64

त्रेशि ब्वछि मो क्रेशिनावुन,
यान्य छेयि तान्य संदारुन दिह ।
फ्रठ चोन धारुन तु पारुन,
कर व्वपकार स्वय छय क्रय ।।

भूख-प्यास से इस (देह) को तड़पाना नहीं । ज्योंही (भूख-प्यास के मारे यह) बुझने लगे, तभी इसको संभालना । तेरे व्रतोपवास और साज-सिंगार पर फिटकार है । उपकार कर, वही तेरा परम कर्तव्य-कर्म है ।

65

जनुम प्रॉविथ व्यभव ना छौंडुम,
लूभन भूगन बरुम न प्रय ।
सोमुय आहार स्यठा ज़ोनुम,
च़ोलुम द्वख-वाव पोलुम दय ।।

जन्म पा कर मैंने विभव (सुख-ऐश्वर्य) की चाह नहीं की । लोभ और भोगैश्वर्य को प्रिय नहीं माना । युक्ताहार को ही पर्याप्त माना । इससे मेरा दुख-दैन्य दूर हुआ, और मैंने दई (देव) की पूजा की ।

66

ख्यनु ख्यनु करान कुन नो वातख,
नु ख्यनु गछख अहंकोरी ।
सोमुय खे मालि सोमुय आसख,
समि ख्यनु मुचरनय बरुन्यन तौरी । ।

खान-पान के अतिरेक से किसी उद्धेश्य को नहीं पाएगा। और निराहार (व्रतोपवासी) बन कर अहंकारी बन जाएगा। खाना युक्त हो, (न कम न अधिक), उसी से समरसता रहेगी। और युत्ताहार विहार (समरसता) से ही बन्द द्वार खुल जाएंगे।

67

ख्यथ गँडिथ श्यमि ना मानसु,
ब्रान्थ यिमव त्रॉव तिमय गॅय खँसिथ ।
शास्त्र बूजिथ छु यमु भय कूर,
सु ना पोच तु दनी लँसिथ । ।

खाने-पहनने से ही मन की शान्ति प्राप्त नहीं होती। जिन्होंने झूठी आशा को त्याग दिया, वे ही उन्नति-शिखर पर पहुंचे। शास्त्र पढ़-सुन कर मनुष्य को यम-भय अति कूर दिखने लगता है। जिस धनी (भाग्यवान) को ऋण न मिला अर्थात् जिसने झूठी आशाओं का सहारा नहीं लिया, वही आनन्द का भागीदार बना।

68

ह्यथ कॅरिथ राज फेरिना,
दिथ कॅरिथ तृप्ति ना मन ।
लूभ व्यना जीव मरिना,
जीवन्त मरि तय सुय छुय ज्ञान ॥

राज्य पा कर और उसका उपभोग करके भी मन संतुष्ट नहीं होता । राज्य त्याग कर भी मन की तृप्ति नहीं होती । लोभ-हीन होकार जीव (मानव) मरता नहीं । यदि कोई जीते ही मर जाय तो वही (तत्त्व) ज्ञान है ।

69

कुस मरि तय कसू मारन,
मरि कुस तय मारन कस ।
युस हर-हर त्रॉविथ गरु-गरु करे,
अदु सुय मरि तय मारन तस ॥

कौन मरे और किसको मारें, यह तो बता ? जो हर-हर (शिवनाम का जाप) तज कर घर के कार्यो (भौतिक सुख-वैभव) में ही उलझा रहे, वही मरेगा और उसी को मारेंगे भी ।

70

गवर शब्दस युस यछ-पछ बरे,
ज्ञानु वगि रटि च्यतु त्वर्गस ।
यन्द्रय शोमरिथ आनन्द करे,
अद कुस मरि तय मारन कस ।।

गुरु शब्द पर जो प्रतिपूर्वक आस्था रखे, ज्ञान की लगाम द्वारा चित्त-अश्व (मन के चंचल घोड़े) को वश में रखे। जो इन्द्रिय-शमन कर सके, उसी को आनन्द प्राप्ति होगी। ऐसी स्थिति में कौन मरे और किस को मारे। अर्थात् ऐसी आत्मा मरण-भय से रहित होगी।

71

शील तु मन छुय पोन्य क्रंजे,
म्बछि येम्य रोट मॅल्य योद वाव ।
होस्त युस मस वालु गंडे,
ति यस तगि तय सु अदु निहाल ।।

ख्याति एवं मान छलनी में जल समेटने जैसी प्रक्रिया है। अर्थात् व्यर्थ यत्न है। हाँ, पवन को मुट्टी में बाँध लेने जैसी पहलवानी जो कर सके, जो हाथी को केश के धागे से बाँध सके यह सब जिससे संभव हो, वह अवश्य निहाल (आत्मज्ञान से समृद्ध) हो जाएगा।

72

जल थमवुन हुतवह तुरनावुन,
ऊर्ध्वगमन पूर्यव चर्यथ ।
काठ धेनि द्वद श्रमनावुन,
अन्तिह सकलुय कपट-चर्यथ ।।

बहता हुआ (नदी या वर्षा का) जल रोकना, अग्नि-ज्वाला का शमन, पैरों दूरा ऊर्ध्वगमन (भूमि से ऊपर उठ कर आकाश-मार्ग की ओर वायु में चलना), काठ की धेनु (गाय) से दूध प्राप्त करना—ये सब अन्ततः कपट-चरित हैं। (यहाँ पर योग-सिद्धियों का घटियापन व्यक्त किया गया है।)

73

यॅम्य लूभ मन्मथ मद चूर मोरुन,
वत् नॉशि मॉरिथ तु लोगुन दास ।
तॅम्य सहज्ज ईश्वर गोरुन,
तॅमिय सोरुय व्यंदुन स्वास ।।

जिसने लोभ, मन्मथ (काम) और मद (अहंकार) रूपी चोर मारे और इन बटमारों को मार कर जो दास (जन-सेवक) बना। वही सहज ईश्वर का जिज्ञासु है और उसी की दृष्टि में यह सब राख (निस्सार) है।

74

मारुख मारुभूत काम-क्रूध-लूभ,
नतु कान बॅरिथ मारुनय पान ।
मनै ख्यनु दिख स्वव्यचारु शम,
विषय तिहुंद क्याह क्युथ दोर ज्ञान ।।

काम, कोध, लोभ घातक हैं—इनको मार कर समाप्त कर दे, अन्यथा ये तुझको अपने का लक्ष्य बनाएंगे। जान-बूझ कर इनको सुविचारों के खाद्य द्वारा शान्त स्थिति में ले आ। यह दृढ़ता से जान ले कि इनके विषय क्या व कैसे हैं।

75

रंगस मंज छुय ब्योन-ब्योन लबुन,
सोरुय चालख बरख स्वख ।
चख रुश तु वॉर गालख,
अदु डेंशख शिव सुंद म्वख ।।

विश्व-रंगस्थल में उसके (ईशवर के) विविध नाम-रूप हैं। इस विविधता में ही उसे पाना बड़ी बात है। सब कुछ यदि सह लेगा तो सुख पाएगा। कोध, घृणा और वैर समाप्त कर दे, तभी शिव का मुख पाएगा।

76

लूभ मलरुन सहज वुवलरुन,
दुलग जलनुन कलुन तुरलव ।
नलशल छुत तत दूर मो गलरुन,
शूनुतस शूनुतल मीललथ गव ॥

लुभ तज दे, सहज (सुवलतुलनुभूतल) कल वलवलर कर । उसकल पलनल बहुत महंगल पड़तल है । कलुनल-मलतुर छुड़ दे । वह तूरे नलकट है, दूर दूंदने की लवलशुतकतल नहीं । वह शूनुत के सलथ शूनुत मलल जलने के अतलरलकुत कुछ नहीं ।

77

पर तत पलन तुंमुत सुलम मलन,
तुंमुत तुल ह्युव मलन द्यन कुतुल रलथ ।
तुेमलसुतत अदत मन सलँपुन,
तँमी डतुंदुत सुर-गुरुनलथ ॥

जलसने अतने-तुरलते कुल समलन मलनल; जलसने दलन और रलत में समदृषुत अतनलई, जलसकल मन अदुत (दुवलधल-रहत) हुल, उसी ने सुलगुरुनलथ (तुरम शलव) के दरुशन कलते ।

78

नाथ! न पान न पर प्रज़नोवुम,
सदोइ बूदुम यि क्व देह ।
चु ब्व ब्व चु म्युल नो ज़ोनुम,
चु कुस ब्व क्वस छु संदेह ॥

हे स्वामी, न मैंने अपने आप को पहचाना न पराये को । सदा इस शरीर को दुख देती रही । 'तू मैं है, मैं तू हूँ,' — इस मेल का रहस्य मैं समझ न पाई । इसी संदेह में रही कि तुम कौन हो और मैं कौन हूँ ।

79

शिव शिव करान हम्सु गथ स्वरिथ,
रुज़िथ व्यवहोय्य द्यन क्यो राथ ।
लागि रुस्त अद्वय युस मन वोरिथ,
तस्य न्यथ प्रसन सुरगुरुनाथ ॥

शिव नाम जपते हुए, हंस गति (सोअहं) का ध्यान धारण कर जो दिन-रात व्यवहारी (सांसारिक कार्यरत) रहे और अपने मन को निस्पृह और द्वित्व भावहीन बनाए, उसी पर सुरगुरुनाथ (परम शिव) नित्य प्रसन्न रहते हैं ।

80

कन्द्यौ गेह तजि कन्द्यौ वनवास,
व्यफोल मन ना रँटिथ तु वास ।
द्यन राथ गँजरिथ पनुन श्वास,
युथुय छुख त् तुथुय आस ।।

कइयों ने गृह दिये, कई बनवास करने लगे। चंचल मन अगर नियंत्रित न हुआ तो सब विफल है, कहीं भी सुख नहीं मिलेगा। रात-दिन श्वासोच्छ्वास का हिसाब रख। अर्थात्, साँस के हर उतार-चढ़ाव में उसका ध्यान धर, फिर जिस भी स्थिति में तू है, वैसे ही रह। स्थान-परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं।

81

कलन कालु ज़ॉल्य योदवय च़े गोल,
व्यंदिव गेह वा व्यंदिव वनवास ।
ज़ॉनिथ सर्वगथ प्रभु अमोल,
युथुय ज़ान्यख तुथुय आस ।।

यदि काल के जाल (समय-चक्र) के साथ-साथ तेरी कलना (इच्छाएं) मिट जाएं, फिर तुम गृहस्थी रहो चाहे बनवासी बन जाओ, यह जान कि प्रभु सर्वगत और निर्मल है, तू जैसे उसको समझेगा, वैसे ही तेरी प्राप्ति होगी।

82

च्यदानन्दस ज्ञानु प्रकाशस,
यिमव च्यून तिम ज्जीवन्तय म्वख्तु ।
व्यषमस संसारनिस पाशयस,
अबोद्य गंडाह श्यथ-श्यँत्य दित्य ।।

जिनको चित्तका आनन्द और ज्ञान के प्रकाश की उपलब्धि हुई, वे ही जीवन-मुक्त हैं। संसार के इस विषम पास को मूर्ख लोग सौ-सौ गाँठ दे-दे कर उलझाते रहते हैं।

83

लोलुक नार ललि ल्वलि ललनोवुन,
मरनय म्वयस तु रूज्जस नु ज़रय ।
रंगरँछि ज़ातुसुह क्याह नु रंग गोम,
बो दपुन च़ोलुम क्याह सन करय ।।

प्रीत-ज्वाला को अपनी कोख में भर मैंने सह लिया। मरने से पूर्व ही मर गई, किंचित भी बची न रही। मेरी जाति निवर्ण थी, फिर भी सभी मैंने अपना लिए। 'मैं हूँ! यह प्रवृत्ति मुझ से छूटी, और क्या कर सकती।

84

रावनु मंजय रावुन रोवुम,
रॉविथ अथि आयस भवसरय ।
असान गिन्दान सहजय प्रोवुम,
दपनुय कोरुम पानस सरय ।।

मैं खो गई, उसी में से मेरा खोना खो गया, खो कर ही भवसागर में मिल गई (प्रकट हुई)। हँसते-खेलते मैंने सहज-प्राप्ति की। यही कथन ही मैंने आत्मवोध का आधार बनाया।

85

लोलकि ब्वखलु वॉलिंज पिशिम,
क्वकल चॅजिम तु रुज़स रसु ।
बुज़म तु जॉजिम पानस चुशिम,
कवु ज्ञानु सोतय मरु किनु लसु ।।

प्रीति के खरल में मैंने दिल को पीसा। कुवासना मिट गई और मैं शान्त रही। फिर मैंने दिल को भूना-पकाया और उसका स्वाद चखा। कैसे जानूँ (कि इस क्रिया से) मैं मर जाऊंगी या जीवित रहूंगी।

86

पोत जूनि वॅथिथ मोत बोलुनोवुम,
दग ललुनॉवुम दयि सँजि प्रये ।
लॅलि-लॅलि करान लाल वुजुनोवुम,
मीलिथ तस मन श्रोच्योम दहे । ।

निशा के अन्तिम प्रहर में जब चन्द्रास्त होने को था, उस घड़ी जागकर मैंने चंचल मन को बहुत समझा-बुझा कर परमार्थ की ओर प्रवृत्त कर दिया। दर्ई की लगन के कारण मैंने व्यथा-वेदना प्रसन्नभाव से सह ली। मैं लल्ला हूँ! यही पुकार-पुकार कर मैंने अपने प्रिय (इष्ट) को जगाया। उससे मिलकर मेरा मन-युक्त दस इन्द्रियों का यह देह पावन हो गया।

87

शे वन चॅटिथ शशिकल वुजुम,
प्रकत हॉजम पवन सुतिय ।
लोलकि नारु वॉलिंज बुजुम,
शंकर लोबुम तमिय सुतिय । ।

छः वन (शक्ति के छः चक्र) लांघ कर मैं आई और शशिकला को मैंने उजागर कर लिया। अर्थात्, जब मैंने सांसारिक बन्धन के विभिन्न प्रलोभनों को योगादि क्रियाओं द्वारा नियंत्रित कर लिया, तभी उस चन्द्रकला तक पहुंची जो परम शिव का स्थान है। इसके लिए मुझे प्राणाभ्यास द्वारा प्रकृति को सुखाना अथवा एक प्रकार से होमना पड़ा और प्रीत (देवानुराग) की आंच से अपना (दिल) भूनना पड़ा। इसी (योगादि तप) द्वारा मैं शंकर को पा सकी।

88

दमी डयँतुम शबनम प्यवान,
दमी डयँतुम प्यवान सूर ।
दमी डीँठुम, अनिगटु रातस
दमी डयँतुम दहस नूर ।।
दमी ऑसुस ल्वकुट कूर ।
दमी सपनिस जवाँ पूर,
दमी ऑसुस फेरान थोरान
दमी सपनिस दँजिथ सूर ।।

(सांसारिक वैचित्र्य तथा रूप-परिवर्तन का वर्णन करते हुए 'लल्ला' कहती है):-

अभी मैंने शबनम पड़ती देखी और क्षण भर में ही पाला पड़ता पाया । अभी रात का अधंकार देखा तो अभी दिन का उजाला देखा । अभी मैं अल्पायु बाला थी दम-भर मैं ही पूर्ण बनी । अभी घूमती-फिरती थी और अभी जल कर राख बन गई ।

89

दमी डींठुम नद वहवँनिय,
दमी ड्यंतुम न सुम न तार ।
दमी डींठुम थँर फवलवँनिय,
दमी ड्यंतुम न गुल न खार । ।

अभी मैंने प्रवाहमयी नदी देखी तो अभी जल का ऐसा विस्तार कि जिस पर न कोई पुल और न कहीं पार उतरने को स्थान; अर्थात्, जिसका कहीं ओर-छोर ही नहीं। अभी मैंने विकासमान पुष्प-लता देखी, पर अभी देखा-न कहीं फूल था और न कांटे।

90

दमी डींठुम गँज दज़वनिय
दमी ड्यंतुम दुह न नार ।
दमी डींठुम पांडवन हुंज़ मॉज,
दमी डींठुम क्रॉजी मास । ।

अभी मैंने जलता चूल्हा देखा और अभी देखा तो न कहीं धुआँ था और न अग्नि। अभी पाण्डवों की मां को (सुख-सम्पन्न) देखा तो अभी (माता कुंती को) कुम्हारिन मौसी के रूप में पाया। (यहाँ पर कुंती मां के शक्ति-संपन्न पाण्डवों सहित राजा से रंक बनने की कथा का संकेत है)।

91

गाटुला अख वुछुम ब्बछि सुत्य मरान,
पन ज़न हरान पोहनि वावु लाह ।
न्यशबोध अख वुछुम वाज़स मारान,
तनु लल बो प्रारान छेन्यम ना प्राह ।।

(संसारिक विषमता का अनुभव व्यक्त करते हुए लल्ला कहती है):-

मैंने एक बुद्धिमान को भूखों मरते देखा मानो पौष-पवन (पतझड़) से वृक्षों के पर्ण झर झर गिर रहे हों। एक बुद्धिहीन को देखा अपने रसोड़े को पीटते हुए। (यह बैषम्य जब से देखा) तब मैं लल्ला उस क्षण की टोह में हूँ, जब मेरे भवबन्धन छूट जायें।

92

केचन दितिथम गुलालु यच्चय,
केचन ज़ोनुथ नु दिनस वार ।
केचन छुनिथम नॉल्य ब्रह्म हँचय,
भगवानु चानि गँच नमस्कार ।।

कइयों को तूने (हे विधाता!) भर-भर गुले-लाला दिए, (अर्थात्, सुख-संतति से मालामाल किया) और कइयों को कुछ देना तक उचित न जाना। कइयों के गले ब्रह्म-हत्याएं मढ़दीं। भगवान, तुम्हारी गतिविधि को नमस्कार हो। (ईश्वर, तेरी लीला तू ही जाने।)

93

केंचन द्युतथम ओरय आलव,
केंचन रचायि नालय व्यथ ।
केंचन अँछ लजि मस च़ेथ तालव,
केंचन पँपिथ गँयि हालव ख्यथ ।।

कइयों को तुने अपने आप ही बुलाया अर्थात् जन्मतः ईश-कृपा का भागीदार बनाया और कुछ वे हैं जिन्होंने वितस्ता को ही गले लगा लिया । कुछ हैं कि हाला पीकर उनकी दृष्टि छत की ओर एकटक जम गई है । और कइयों की पकी फसलों को टिड्डियाँ खा गईं ।

94

केंचन रँन्य छय शिहिज बून्य,
न्यबर नेरव शुहुल करि ।
केंचन रँन्य छय बर प्यठ हून्य,
नेरव न्यबर तु ज़ंग खेयि ।
केंचन रँन्य छय अदल-तु-बदल,
केंचन रँन्य छय ज़दल छाय ।।

कइयों की रानियां (पत्नियां) छायादार चिनार-सी हैं—बाहर आए कि उसकी छाया तले राहत मिल जाए । कइयों की बीवियां दार की कुत्तियाँ जैसी हैं, बाहर आये नहीं कि काटने लगीं । कइयों की पत्नियाँ गडबड़ करने और उलझन बढ़ाने की तरह आवश्यकतानुसार सहायक होती हैं ।

95

केंह छी न्यंदरि हँती वुदी,
केंचन व्वदन्य नेसर पेयो ।
केंह छी स्नान वॅरिथ अपुतिय,
केंह छी गेह बॅजिथ ति अक्रयी ।।

कुछ हैं, जो दिखते निद्रामग्न हैं, पर होते हैं जागृत, और कुछ वे जो जागते हुए निद्रारत रहते हैं। कुछ स्नान करके अपवित्र ही होते हैं और कुछ ग्रहस्थ धारण कर भी अक्रिय होते हैं, अर्थात्, कर्म लिप्त नहीं होते।

96

ग्रटु छु फेरान ज़ेरे,
ओहकुय ज़ानि ग्रटुक छल ।
ग्रटु येलि फेरि तय ज़ॉव्युल नेरे,
गूँवाति पानय ग्रटु-बल ।।

चक्की निरन्तर घुमाते रहो तो घूमती रहेगी, किन्तु चक्की के चक्कर का रहस्य कोई जानता है तो वह है उसका अक्ष। जब चक्की का यह अक्ष चाहे तो महीन आटा पिसकर निकल आए और गेहूँ स्वतः चक्की के पाटों के निकट पहुंच जाता है। (अर्थात्, यदि साधक लक्ष्य तक पहुंचने का सतत यत्न करता रहे तो वह ध्येय को पाएगा ही।)

97

यथ सरस सिरि फोल ना व्यच्ची,
तथ सरि सकली पोन्य चेन ।
मृग श्रृंगाल गंड्य जलहस्ती,
जेनु ना जेनु तु तोतुय पेन ॥

जिस सर (सरोवर) में राई का दाना भी समा न सके, उसी सरोवर के पानी से प्यास बुझती है। मृग, श्रृंगाल, गैंडा और जल-हस्ति (जल-हाथी), सब इसी में उत्पन्न होते ही गिर जाते हैं।

98

त्रयि न्यंगि सराह सॅरि सरस,
अकि न्यंगि सरस अर्शस जाय ।
हरम्बखु कवु सर अख सुम सरस,
सति न्यंगि सरस शिन्याकार ॥

तीन बार सरोवर को जलमय-ही-जलमय (आप्लावित) देखा, ऐसा स्मरण है। एक बार की याद है कि हरमुख से कौंसर तक एक पुल देखा। सात बार सरोवर को शून्याकार (विलीन) होते देखा। (परम पद- प्राप्ति कर लल्ला को पूर्वजन्मों की स्मृति पर भी नियन्त्रण प्राप्त हो सका-जलप्रलय, सहाप्रलय और सृष्टि का ज्ञान भी उनसे तिरोहित न रहा।)

99

कुस डिंगि त कुस ज़ागि,
कुस सर वतरि तेली ।
कुस हरस पूज़ि लागि,
कुस परमु पद मेली ।।

कौन सुप्त है और कौन जागृत ? कौन-सा सरोवर है जिससे अनवरत जल बूंद-बूंद रिसता (बह निकलता) है ? कौन सी ऐसी वस्तु है जो हर (शिव) के पूजार्थ हो ? वह कौन सा परमपद है, जो (साधनोपासना के फलस्वरूप) प्राप्य है ?

100

मन डिंगि अक्वल ज़ागि,
दौंङ्य सर पंचयँन्ध्य वतरि तेली ।
स्वव्यचारु पोन्य हरस पूज़ि लागि,
परमु पद चीतनु शिव मेली ।।

मन निद्वारत है और 'अकुल' जागृत-अर्थात्, जब जीवात्मा सुप्त होती है तो वह उसकी मनस्थिति कहलाती है और जीवात्मा, प्रकृति, देश, काल, पंचत्व की अनुभूति से ऊपर उठती है तो वह सदा जागृत होती है। सुदृढ़, सदा रहने वाला सरोवर पचेन्द्रियां हैं, जिनसे सदा जल निःसृत होता है। स्वात्म-चिंतन का जल है जिससे हर (शिव) की पूजा की जाती है। इस (साधनोपार्जन) से जो परमपद प्राप्य है, वह है शिव-चैतन्य की उपलब्धि।

101

शिव गुर तय केशव पलनस,
ब्रह्मा पायरेन व्वलस्यस ।
युगी यूग कलि प्रजनाव्यस,
कुस दीव अश्ववार प्यठ खसेस ॥

शिव घोड़ा है और केशव (विष्णु) काठी । ब्रह्मा रिकाबों की शोभा बढ़ाता है । योगी योग-कला से पहचानता है कि वह कौन-सा देव है जो इस अश्व पर चढ़कर सवारी करने वाला है ।

102

अनाहत ख-स्वरूप शुन्यालय,
यस नाव नु वर्ण न गुथ न रुफ़ ।
अहं व्यमर्श नाद-बिन्दुय यस वोन,
सुय दीव अश्ववार प्यठ खसेस ॥

जो अनाहत-ओम की अनश्वर ध्वनि है, जो आकाश-स्वरूप (सर्वत्र व्याप्त) है, जिसका वास शुन्यालय (दिशा-कालातीत) सहस्त्रार है, जिसका न कोई वर्ण है न गोत्र और न ही कोई रूप । जिसके विषय में कहा जाता है कि आत्मविमर्श से (तत्त्वनिरूपण में) वह नाद व बिंदु का ही प्रपिबिंब है । वही है देवता जो अश्व पर चढ़कर सवारी करता है ।

103

जननि ज़ायाय रुत्य तय वेंतिय,
कॅरिथ व्वदरस बहु कलीश ।
फीरिथ द्वार बज़नि वॉत्य तँतिय,
शिव छुय क्रूठ तय च़ेन व्वपदीश ।।

जननी से भले-चंगे स्वस्थ उत्पन्न हुए, यद्यपि उनके उदर को बहुत क्लेश दिये फिर-फिर कर वे वहीं लौट आए और उसी द्वार की प्रतीक्षा करने लगे। शिव का पाना कठिन है। ध्यान रख यह उपदेश है।

(टिप्पणी में दिए हुए अन्य 'ललुवाख' से इसका अर्थ स्पष्ट होता है। इसका तात्पर्य है कि—तुमने गर्भ में ही जो नियम बांधा उसे स्मरण कर। जीते जी ही तू मरे, तब तुम्हारा मर्तबा (पद) ऊंचा होगा।)

104

खसय शेल पीठस तु पटस,
स्वय शेल छय प्रथवुन दीश ।
स्वय शेल शूबवॅनिस ग्रटसु,
शिव छुय क्रूठ तय च़ेन व्वपदीश ।।

जो शिला पीठ (चौकी) और पट (पाषाणमय सम-तल सड़क) पर है, वही शिला पृथ्वी-तल पर है। वही शिला शोभायमान चक्की में है। शिव-प्राप्ति दुष्कर है। इस उपदेश को सावधानी से समझ ले।

105

यँहय मातृ-रूप पय दिये
यँहय भार्या-रूप कर विशीष ।
यँहय माया-रूप अन्ति जुव द्यये,
शिव छुय क्रूठ तय चेन व्वपदीश ।।

(नारी की महिमा वर्णन करते हुए 'लल्ला' कहती है) माता के रूप में यही (शिशु को) दूध पिला कर उसका भरण-पोषण करती है और यही (नारी) भार्या-रूप में विशेषतः अपनी (संगिनी) बन जाती है। यही अन्ततः माया रूप धारण करके प्राण-हरण तक कर लेती है। शिव-प्राप्ति कठिन है। तनिक सोच-समझ ले, यह उपदेश है।

106

रव मतु थलि-थलि ताँपितन,
ताँपितन व्वतम दीश ।
वरुन मतु लूकु गरु अँचितन,
शिव छुय क्रूठ तय चेन व्वपदीश ।।

कभी हो सकता है कि रवि थल-थल (हर स्थल) को प्रकाशमान न कर दे? अर्थात् सूर्य-ताप सर्वत्र उपलब्ध है वह (सूर्य) मात्र उत्तम देश ही नहीं तापता। वरुण (जल देवता) भी घर-घर में प्रविष्ट हुए बिना नहीं रहता। अर्थात् ईश्वर-प्रदत्त सूर्य जल आदि जिस प्रकार भेदभाव रहित सबके लिए हितकर है, उसी प्रकार शिव भी सबका है, सबके लिए है। इसी तत्व (शिव) का समझना कठिन है। ज़रा ध्यान देकर यह उपदेश सुन ले।

107

शिव छुय ज़ॉव्युल ज़ाल वाहरॉविथ,
क्रंजन मंज तॅरिथ क्यथ ।
ज़िंद नु वुछहन अद कति मॅरिथ,
पान मंज पान कड़ व्यर्चॉरिथ क्यथ ॥

शिव महीन जाल बिछाए हुए (सर्वत्र व्यापक) है। देखो तो, सब शरीरों (अस्थि-पंजरों-पदार्थों) में किस प्रकार रच-बस गया है। यदि तू जीते-जी उसका साक्षात्कार न कर पाया तो मर कर फिर क्या-कैसे पाएगा। विवेक और चिन्तन कर स्वात्म में से ही अहंतत्त्व निकाल दे।

108

असे प्वन्दे ज्वसे ज़ामे
न्यथुय स्नान करि तीर्थन ।
वुहर्य वहरस नोनुय आसे,
निशि छुय तु प्रजनावतन ॥

वही (शिव ही) है, जो हंसता है, छींकता है, खांसता है, जम्हाई लेता है। तीर्थों पर वही नित्य स्नान करता है। सारा साल वह अनवरत निर्वसन (दिगम्बर) रहता है। वह तो तुम्हारे निकट है उसे पहचान ले। अर्थात् अण्ड-ब्रह्माण्ड की सभी गतिविधियों का प्रेरक (शिव) तुम से दूर नहीं, मात्र पहचान (प्रतिभिज्ञा) की कमी है।

109

शिव छुय थलि थलि रोजान,
मो ज्ञान द्योन्द तु मुसलमान ।
त्रुख हय छुख तु पान प्रजनाव,
स्वय छय साहिबस सत्य ज्ञानी ज्ञान ॥

शिव स्थल-स्थल पर (सर्वत्र) व्यापक है। हिन्दू और मुसलमान में कोई भेदभाव न कर। यदि तू बुद्धिमान है तो अपना अस्तित्व (आत्म-तत्त्व) पहचान। वही वास्तव में साहिब (शिव) के साथ तुम्हारी जानकारी है।

110

तन्त्र गलि तय मन्थर म्वचे,
मन्थर गोल तय मोतुय च्यथ ।
च्यथ गोल तय केह ति ना कुने,
शून्यस शून्याह मीलित गाव ॥

तंत्र (आगस शास्त्र-कथन) की इति हुई तो मन्त्र (रहस्यपूर्ण जप-तप यज्ञादि किया) शेष रहा-अर्थात् कथनी (ज्ञानोपार्जन) की सीमा के परे ध्यानोपासना का क्षेत्र बचा रहता है। (और जब) मंत्र भी मिटा तो मात्र चित्त (चिन्मय तत्त्व) बचा रहा। चित्त भी जब मिट कर शिवतत्त्व में मिल गया तो कहीं कुछ न रहा अर्थात् सब अभावमय हो गया-शून्य में शून्य विलीन हो गया।

111

भानु गोल तय प्रकाश आव ज़ूने,
चन्द्र गोल तय मोतुय च्यथ ।
च्यथ गोल तय केह ति ना कुने,
गय भुवः भुवः स्वर व्यसजिथ क्यथ ।।

भानु (सूर्य) अस्त हुआ तो चन्द्र की ज्योत्स्ना फैल गई। चन्द्र भी छिप गया तो चित्त बचा रहा। चित्त (चिन्मय आभास) भी मिटी तो कहीं कुछ न रहा-सब देश-काल की परिधि से पर हो गया और भूः भुवः (आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक तत्त्व) सब नामेशष हो गए; भूमि, आकाश और अवकाश सब ह्यतत्त्व में विलीन हो गए।

112

अभ्यासी सव्यकस्य लय व्यथु,
गगनस सगुन म्यूल समिचूटा ।
शून्य गोल अनामय म्वँतु,
योहय व्वपदीश छुय बटा ।।

जब योगाभ्यास द्वारा दृश्यमान संसार का यह विस्तार लय हो जाता है; जब सगुण (ब्रह्माण्ड) गगन (आकाश-अवकाश) में मिल जाता है अर्थात् जब जीवात्मा योगादि अभ्यास द्वारा अपनी सीमित सत्ता को सीमातीत ब्रह्मतत्त्व में लीन कर देती है तो शून्य (ब्रह्माण्ड-युक्त अवकाश) भी नामशेष हो जाता है बचा रहता है मात्र अनामय (रोग-शोक-उपाधि विहीन) शिवतत्त्व। हे ब्रह्मण! यह उपदेश (तत्त्व निरूपण) है।

113

वाख मानस क्वल अक्वल ना अते,
छोपि मुदरि अति ना प्रवीश ।
रोज़ान शिव शकथ ना अते,
म्वचि यि केह तु सुय व्वपदीश ।।

वहाँ (परमतत्त्व) में न वाणी की गति है न मन की पहुंच। वहां 'कुल' (३६ तत्त्वों की सृष्टि) और 'अकुल' (सगुण सृष्टि से परे मनस्तत्त्व-आकाशादि) की भी पहुंच नहीं। मौन मुद्राओं का भी वहाँ कोई प्रवेश नहीं। (और तो और) नाम-रूप-यम शिव भी वहाँ (परम-पद में) नहीं रहते। इस सबसे परे जो कुछ बचा है, वही प्राप्त है। उसी को पाने की शिक्षा है।

114

चु ना बो ना ध्येय ना ध्यान,
गौ पानय सर्व क्रिय मँशिथ ।
अन्यव डयूंतुख केह ना अनवय,
गँयि सथ लयि पर पँशिथ ।।

वहाँ 'तू' है न 'मैं' हूँ। न ध्येय है और न ध्यान। सर्वक्रयी (विशकर्ता) स्वयं भी (उस स्थिति में) गुम है। अन्धों ने इस दृष्टान्त का कोई अर्थ नहीं पाया, अर्थात् जो वस्तुत्त्व और आत्मतत्त्व के रहस्यों से अनभिज्ञ है ऐसे ज्ञान-चक्षुहीन लोगों को यह बात अर्थहीन लगी, किन्तु जब सत्त (सज्जनों) ने पर (उत्तम-ईश तत्त्व) का साक्षात्कार किया तो वे तल्लीन हो गए। (अन्यार्थ) जब साधक को परमशिव (शिवदृष्टि) मिली तो सप्त भुवन लय हो गए, एक परम शिव की सत्ता शेष रही।

115

तुर सललल खोतु तय तुरे,
ह्युम्य तुरल गुंय ब्यन-अब्यन व्यमरुशु ।
चैतन्य रव भलतल सब समे,
शलवसय चुरलचुर जग पशल ।

शीत जब सललल (जल) पर अभलभूत हुती है तो वह जम कर यख बनतल है यल हलम कल रूप धरण करतल है । वलमरुशु से कलम लललल जलतु तल जल के इन तीन रूपुुं (सललल, यख और बरुफ) में भेद हुते हुए भी मूलतः कुई भेद महीं । जब चैतन्य (वलवेक-रूपी) रवल इन पर चुरलचुर जगत शलवमय दरखलई देतल है ।

116

चुय दीवु गरतस तु धरती रुजख,
चैय दीवु दरतलथ कुरुंजन प्रलण ।
चुय दीवु ठनल रुस्तुय वजख,
कुस जलनल दीव चुन परमलन ॥

हे देव ! तुम्हीं इस सृषुटल और धरती पर छलए हुए हु । हे देव ! तुम्हींने इन भौतलक शरीरुुं में प्रलण फूंक दरल । धवनलहीन (नलस्सवन) हुते हुए भी, हे देव, इस बुरहुलणुड में तुम्हलरी ही गुंज-अनुगुंज है । हे देव ! कुन तुम्हलरल परलणलम (मलप-तुल) जलन सकतल है ?

117

कुन्यर हय बोऒख कुनि नो रोऒख,
कुनिरन कोरनम कुनुय आकार ।।
कुनुय ऑसिथ द्वन हुन्द जंग गोम,
सुय बेरंग गोम वॅरिथ रंग ।।

अगर तू समझे एकेश्वरवाद क्या है तो तुम्हारी (अहं) सत्ता कहीं न रहेगी। इसी एकत्व ज्ञान ने मेरा (स्व) आकार लय कर दिया, अर्थात् 'मैं' उस (परम तत्त्व) में मिट गई। एक होते हुए भी दुई (द्वित्व) की यह जंग जारी है। स्वयं वह बेरंग (निर्वर्ण) है, किन्तु मुझे रंग (वर्ण-भेद) में रंग गया।

118

यिमय शे च़े तिमय शे मे,
श्यामगला च़े व्यन तॉठिस ।
योहय व्यन-अभीद च़े तु मे,
च़ु शेन स्वॉमी बो शेन मुशस ।।

हे श्यामगला (नीलकंठ), जिन छः विशेषणों से तू युक्त है, वे ही छः विशेषण मेरे भी हैं। किन्तु तुम्हारे बिना मैं विपत्ति में पड़ी हूँ। तुममें और मुझमें यही भिन्नता या भेद है कि तुम छः के स्वामी हो और मुझे छः लूट गए।

(यहाँ छः विशेषणों के अनेक अर्थ लिए गए हैं—मनुष्य के विषय में छः से काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य अथवा पंचेन्द्रियाँ और मन या शैशव आदि छः अवस्थाएं – अर्थ लिया जाता है और नीलकंठ के विषय में छः विशेषणों से सर्वज्ञ सर्वव्यापक, निरपेक्ष, सर्वशक्तिमान, निर्विकार, निर्गुण

आदि अर्थ अभिप्रेत हैं। परन्तु शैवमतवादी शिवाद्वैत के विस्लेषण में यह मानते हैं कि साधक जब तक छः (विकारों) के अधीन है तब तक वह (शिव तत्त्व से) दूर है और जब वह उनका स्वामी बनता है तो साधक निज स्वरूप (परमपद) को पाता है।)

119

लल बो द्रायस कपसि-पोशिचि सँच्य,
काँड्य तु दून्य कॅरनम यच्युय लथ ।
तुयि येलि खॉरनम जॉविजि तुए,
वोवुर्य वानु गॅयम अलाँज़इ लथ ।।

मैं लल्ला, उसी उमंग और चाव से इस संसार में आई थी, जिस प्रकार कपास के डोडे से फूल खिल उठता है। परन्तु बेलने की रगड़ और धुनिये की धुनकी ने तब मेरी खूब गत बनाई, जबकि महीन रेशे बना-बना कर मेरा कण-कण उड़ा दिया गया। जुलाहे के करघे पर पहुँचकर मैं लटका दी गई।

120

दोब्य येलि छाँवनस दोब्य-कनि प्यठुय,
सज़ तु साबन मॅछनम यच्युय ।
सुच्य येलि फिरनम हनि हनि काँच्युय,
अद ललि मे प्रॉवम परम-गथ ।।

(वस्त्र के रूप में) जब धोबी ने मुझे पत्थर पर दे पटका और भर-भर साबुन-सोडा मल-मल कर मुझे साफ कर दिया, फिर दर्जी ने कैंची से मेरे अंग-अंग काट लिए (इतनी सब यातनाएं सह और अवस्थाएँ लाँघकर) तब मैं कहीं परम को पा सकी।

121

दीशि आयस दश दीशि चॅलिथ,
चॅलिथ चोटुम शुन्य अदु वाव ।
शिवुय ड्युंतुम शायि शायि मीलिथ,
शे तु त्रे त्रोपिमस त शिवुय द्राव ।।

दस दिशाओं में धूम-फिर कर मैं यहाँ अपने देश में आई। यों इन बन्धनों से मुक्त होकर मैंने तूफान बन आकाश को भेद दिया अर्थात् योगाभ्यास द्वारा मैंने चिदा-काश में प्रवेश किया। देखा तो वहाँ सर्वत्र शिव-ही-शिव व्यापत था। जब मैंने छः (पंचेन्द्रिय व मन) और तीन (मलत्रय) के कपाट बन्द किए तो वहाँ शिव तत्त्व ही मूल कारण सिद्ध हुआ।

122

स्वप्न द्राव वहिन तु मल गव वॅथिथ,
येलि मे अनलाह द्युतमस ताव ।
कतुर ज़न गॅयस लोलु व्यगलिथ,
यलि कठकोश चोल निशि रव द्राव ।
लल बो रुज़स तेलि शिहलिथ,
येलि चेतस प्यव बो तस नाव ।।

स्वर्ण को जब मैंने अनल (अग्नि) में तपाया और जब वह भट्टी से से तप कर निकला तो उसकी मैल जल (मिट) गई। जब सूर्य निकला, बर्फ पिघल गई तो मैं जमी हुई यख की तरह प्रीत की मारी पिघल गई। मैं 'लल्ला' जब शान्त मन बनी, जब मुझे यह सुधि आई कि 'मैं' उसी का नाम हूँ। जो कुछ है वह परम शिव ही है।

123

शून्युक मॉदान कोडुम पानस,
मे ललि रुज़ुम न ब्वद न होश ।
भेदी सपनिस पानय पानस,
अदु कमि गिलि फोल ललि पम्पोश ।।

मैंने शून्य का एक सीमातीत मैदान (क्षेत्र) पार किया। मुझ 'लल्ला' को कोई सुध-बुध न रही। (जब) स्वात्म तत्व के भेद (रहस्य) से मैं अभिज्ञ हुई, तब (देखते ही बनता था कि) 'लल्ला' के लिए कीचड़ से कमल खिल उठा।

124

मिथ्या कपठ असथ त्रोवुम,
मनस कोरुम सुय व्यपदीश ।
जनस अन्दर कीवल ज़ोनुम,
अनस ख्यनस कुस छुम दीश ।।

मिथ्या, कपठ और असत्य का त्याग किया, यही उपदेश मैंने मनके उपयुक्त समझा। जन-जन में मैंने 'केवल' (एक परम तत्व) को जाना फिर भला अन्न खाने में किसी से कोई द्वेष (घृणा) क्यों हो! जब सर्वजन में एकात्मा (शिव तत्व) का वास है तो किसी से घृणा क्यों की जाए।

125

आयस ति स्योदुय तु गछु ति स्योदुय,
सेदिस होल मे कर्यम क्याह ।
बो तस ऑसुस आगरय व्यंजुय,
व्यंदिस तु व्यंदिस करेम क्याह ।।

सीधी ही आई थी और सीधी ही जाऊँगी भी । अर्थात्, जन्म से ही मैंने सरल-सहज स्वभाव अपनाया और मरणपर्यन्त मेरा जीवन-व्यवहार सरल रहेगा । (ऐसे में) मुझे सीधी का कोई टेढ़ा-तिरछा (कुटिल जन) क्या बिगाड़ेगा । मुझे वह (परम तत्त्व) आदि-रत्रोत से ही जानता है, मुझे जानी-पहचानी को वह क्या करेगा ।

126

लल बो चायस स्वमन बागु-बरस,
वुछुम शिवस शक्थ मीलिथ तु वाह ।
तँत्य लय वँरुम अमृत-सरस,
ज़िन्दय मरस तु मे करि क्याह ।।

मैं 'लल्ला', जब स्वमन-रूपी बाग के द्वार से भीतर गई तो देखा – शिव शक्ति से मिला हुआ था । मैं आनन्द-विभोर हुई वहीं मैं अनृत-सर में विलीन हो गई । मैं तो जीते जी ही मर गई, मुझे काहे की चिन्ता है ।

127

अन्दर ऑसिथ न्यबर छोंडुम,
पवनन रगन कॅरनम सथ ।
ध्यान किन्य दय ज़गि कीवल ज़ोनुम,
वोन्यगव संगस मीलिथ क्यथ ॥

भीतर था तव भी मैं उसको बाहर दूँढती रही। प्राणायाम (प्राणापान-व्यानोदान-समान के विधिवत नियन्त्रण) ने मेरी रगों को सांत्वना दी। ध्यानादि योग क्रिया द्वारा मैंने जगत में दर्ई की एकता (कैवल्य) का अनुभव किया। इस प्रकार रंग (विश्व) संग (विश्वात्मा) में निमज्जित होकर एकाकार हो गई।

128

सम्सारस आयस तपसुय,
बुद्धि प्रकाश लोबुम सहज ।
मर्यम नु कांह तु मरु नु काँसि,
मरु नेछ तु लसु नेछ ॥

मैं तपस्विनी बनकर इस संसार में आई। बुद्धि-ज्ञान प्रकाश से मैंने सहज (स्वात्म-परमात्म-बोध) पा लिया। न मेरा कोई मरेगा और न मैं ही किसी के लिए मरूँगी। मरुं तो वाह वाह! जीवित रहूँ तो वाह वाह! अर्थात्, आत्म-बोध जीवन-मरण की अपेक्षा से परे है।

129

द्वादशान्तु मंडल यस दीवस-थजि,
नासिक पवनु दौर्य अनाहतु रव ।
स्वयम कल्पन अन्ति चजि,
पानय सु दीव तु अर्चुन कस ।।

जिसने द्वादशान्त मण्डल (बह्नांड) को देवस्थली (परम शिव का आवास) समझा, प्राण वायु का नियन्त्रण करके जिसने अनहद ध्वनि, (ओम की अनुगूंज) सुनी, अर्थात् हृदय से नासिका द्वार तक के श्वासोच्छ्वास में जो ओझम का ही आभास पाता रहा और अन्ततः जिसका अपने बारे में कल्पना-भरमाना मिट गया, वह स्वयं 'देव' है। फिर अर्चन किसकी ?

130

गगन च्युय भूतल च्युय,
च्युय छुख द्यन पवन तु राथ ।
अर्ग चन्दुन पोश पोन्य च्युय,
च्युय छुख सोरुय तु लॉगिज़ी क्याह ।।

तू ही गगन है, तू ही भूतल, तू ही दिन, पवन और रात है। अर्घ्य, चन्दन, पुष्प और जल भी तू ही है। जब तू ही, हे देव, सब कुछ है तो भेंट करूँ तो क्या ?

131

सतसंग पवित्र दोरुम,
 नवि सँच रुजस त्रुपरिथ बर ।
 दश दशमी द्वार प्रजलुवुम,
 ईकादश चन्द्रमस वँरुम लय ।
 दादशमंडल द्यख शुमुवुम,
 त्रयूदश त्रिवेनी नौवुम काय ।
 चतुर्दशि च्चदाय भवन शमाँविम,
 पूर्णपांचदशि चन्द्रन कोरुम व्वदय ।
 ओकदोह भूगी पान संदोरुम,
 रस्सु ति रुजस कल्पन त्रौविथ ।
 सुय का मालि वँरुम प्वतल्यन पूज ॥

(इस वाक्य में ललद्यद, शुक्लपक्ष के संकेत वाक्यों दारा योगाभ्यास के विभिन्न चरणों-आयामों का रहस्य-निरूपण करती है)

प्रारम्भ में मैंने सत्संग का पवित्र, धारण किया । नवें दिन नई आशाओं के साथ मैंने कपाट बन्द कर लिये । दसवें दिन मैंने दसवें द्वार को प्रकाशमान कर दिया, अर्थात् नवद्वार बन्द करके ध्यान-दीप जला कर दशम द्वार ज्योतिर्मय कर दिया । एकादशी को चन्द्र सहस्त्रार में लय हो गई । बारहवें दिन द्वादश मण्डल (ब्रह्मरंध्र) में दिशा-भ्रम को नियंत्रित किया । तेरहवें दिन गंगा-यमुना-सरस्वती एवं इडा-पिंगला-सुषुम्णा की त्रिवेणियों में काया स्वच्छ कर दी । चतुर्दशी को चौदह भुवनों पर अधिकृत हुई और पूर्ण पंचदशी पूनम को चन्द्रोदय होते देखा । प्रतिपदा को मैंने भोगी शरीर फिर संभाला । तब मैं सब कल्पना (चिन्तादि) त्याग कर निश्चित हो बैठी, यही मेरी मूर्ति-पूजा है ।

132

ओंकार येलि लयि ओनुम,
बुह्य कोरुम पनुन पान ।
शुह-वोत त्रॉविथ सथ मार्ग रोदुम,
तेलि लल वॉचुस प्रकाशस्थान ।

जब ओंकार को मैंने अपनी और अनुरक्त कर लिया, मुझे अपने आपको एक अंगारे की तरह तपाना पड़ा, अर्थात् योगक्रिया द्वारा अपने शरीर को आंच दे कर मैंने विचारों को प्रणव कर केन्द्रित किया, तभी मैं उसकी बन गई। और जब शशमार्ग (छः चक्र या शक्ति के छः चरण) त्याग कर मैंने सन्मार्ग का सातवां पथ (सहस्रार चक्र) धारण किया, तब मैं लल्ला, प्रकाशस्थान तक जा पहुंची।

133

दमु-दमु ओमकार मन परनोवुम,
पानय परान तु पानय बोज़ान ।
सूअहं पदस अहम गोलुम,
तेलि लल बो वॉचुस प्रकाशस्थान ।।

हर क्षण मन को ओंकार का पाठ कराया। स्वयं ही पढ़ती रहती, स्वयं ही सुनती रही। सोअहम, पद में से 'अहं', को समाप्त किया अर्थात् 'उस' और 'मैं', के भेदभाव को मिटाया, अहं तत्त्व मिटा कर शिव रूप ही बन गई। तब मैं लल्ला, प्रकाशस्थान तक जा पहुंची।

134

ज्ञानक्य अम्बर पूरिथ तने,
यिम पद ललि दॅप्य तिम हरदि-आँख ।
कारुंय प्रणवक्य लय कोर लले,
च्यथ ज्योत् कौसुन्य मरनुन्य शाँख ॥

अपने तन पर ज्ञान के अम्बर (वस्त्र) धारण करके उन पदों (शिक्षापूर्ण वाक्यों) को अपने हृदय-पटल पर अंकित कर, जो 'लल्ला', कह गई है। 'प्रणव', के कारण 'लल्ला', ने चित-ज्योति (आत्म-प्रकाश) में अपने आपको लय कर दिया। (इस तरह) वह मृत्यु का भय दूर कर पाई।

135

मुकुरस ज़न मल चोलुम मनस,
अदु मे लोबुम ज़नस ज़ान ।
सु येलि ड्युंतुम निशि पानस,
सोरुय सुय तय ब्व नो कैह ॥

जब मेरे मन का मैल ऐसे मिटा जैसे दर्पण से मैल, तब कहीं मुझे आत्म-ज्ञान प्राप्त हुआ। और जब उसको मैंने अपने निकट देखा – (तो यही पाया कि) वही सब कुछ है और मैं कुछ भी नहीं।

136

अँद्रिय आयस चँन्दरुय गारान,
गारान आयस हिह्यन हिह ।
चुय हय नारान चुइ हय नारायन,
चुय हय नारान यिम कम विह ।।

भीतर (अन्तर्मन) से मैं चन्द्र ढूँढते-ढूँढते बाहर आई। मैं ऐसों को ढूँढती रही, जो समान आकार-प्रकार के हों अथवा मेरी खोज का रहस्य यह खुला कि समस्वभाव ही परस्पर मिल जाते हैं। यदि तू ही नारायण रूप में सर्वत्र व्याप्त है तो यह रूप भेद कैसा।

(पाठभेद)– यदि तू ही नारायण है तो तुम्हारा ही हाथ पसार कर मांगना और तुम्हारे ही हाथों मारा जाना यह सब बैचित्र्य क्या है। जब कोई और है ही नहीं तो यह नाम-रूप भेद कैसा? अथवा तू ही स्रष्टा, धारण कर्ता (पालक) व संहर्ता है – यह सब क्या है?

137

पानस लॉगिथ रोवुख मे चुय,
मे चे छांडान लूस्तुम द्वह ।
पानस मंज येलि ड्युंतुख मे चुय,
मे चे त् पानस द्युतुम छोह ।।

अपने आप में तन्मय हुई तो मैं तुम्हें खो बैठी। (तब) तुम्हें ढूँढते-ढूँढते मेरा दिन भी अस्त हो गया। (परन्तु) मैंने ज्योंही अपने भीतर तुम्हें ही देखा, तो मैं मस्त होकार तुम्हारे साथ अटखेलियां करने लगी। (आरम्भ में 'लल्ला, आत्मा और परमात्मा को अलग-अलग समझी। जब उसे एकत्व (अभिन्नत्व) का बोध हुआ तो वह आनन्द विभोर हो उठी।)

138

च्यथ नोवुय चन्द्रुय नोवुय,
जलमय ड्यंतुम नवम नोवुय ।
यनु प्यठु ललि मे तन-मन नोवुय,
तनु लल बो नवम नॅवुय छेस ॥

चित्त (चिदात्मा) भी नया और चन्द्र भी नया। मैंने देखा कि यह जलमय (प्रकृति-दर्शन) क्षण-क्षण नित-नया है। जब से मैं लल्ला, - ने तन-मन को परिमार्जित कर नित-नूतन रखा, तब से मैं 'लल्ला', नई की नई रही। (संभवतः यहाँ लल्ला, बौद्धमत के प्रवाह-मय अनादित्व की ओर संकेत करते हुए कहती है कि आत्मतत्त्व अथवा शिवदृष्टि पर भूत-भविष्य की उपाधि नहीं व्यापता। वह सदा-सर्वदा नित-भविष्य की उपाधि नहीं व्यापती, वह सदा-सर्वदा नित-नूतन है।

139

यि यि करुम कोरुम सु अर्चुन,
यि रसनि व्वचोरुम तिय मन्थुर ।
यिहय लोगुम दिहस पर्चुन,
सुय यि परम शिवुन तन्थुर ॥

मैंने जो-जो कर्म किए वह मेरी अर्चना थी, जो रसना (जीभ) से उच्चारण किया वह मन्त्र था। देह से यदि कोई काम मैंने लिया, वह था यही परिचय-प्रत्यभिज्ञा-और यही परम शिव के तंत्र का सार-तत्त्व है।

140

अजुडल गलतुरी हडुसु हडुसु जूडडलथ,
अहं तुरूवलथ सुड अद रठ ।
डेडुड तुरूव अहं सुड रूद डलनड,
डू न आसुन छुड वुडडडीश । ।

अजुडल गलतुरी-डंतुर कल डुरतुडेक सलंस डें ऑलड कर । अहं डलव कुू तुडलग कर 'उसुी' अरुथलत डडुड-ततुतु कुू धलरण कर । ऑलसने 'अहं, कुू छूडु डलडल, वही वलसुतुव डें 'सुव' (आतुडडलव) के रूड डें सुथलर रहल । सुीख कुी डलत है 'अहं' कल अडलव, ! तदलकलर हुूनल !

141

ऑसुस कुनलड तड सलँडनलस सुडठल,
नजुडीख ऑसलथ गूडस दूर ।
ऑलहलर-डलँतलन कुनुड डुडूतुड,
गूडस खेथ-केथ कुुवंऑलह कुूर । ।

डें अकेलुी थुी और अनेक हुू गरुई (एकुूअहं डडुसुडलडः) । नलकट हुू कर दूर ऑल डुडी । डुीतर और डलहर (वुडकुतुत-अवुडकुतुत) उसुी एक (शलवततुतुव) कुू देखल । कुूवुन कुूडर डेरल सब कुूछ खल डुी कर डुडुुे धुूखल दे कुूले गल ।

142

ओरु ति पानय योरु ति पानय,
पोत वाने रोज़ि न ज़ांह ।
पानय गुप्त तु पानय ज़ॉनी,
पानय पानस मूद न ज़ांह ।।

उधर भी स्वयं और इधर भी वही स्वयं है । अर्थात्, जिधर देखती हूँ उधर वह-ही-वह है, वह कहीं पीछे रहने का नहीं । स्वयं ही तो ज्ञानी है । स्वयं वह अपने रहस्य का स्वामी है । वह कभी मरा नहीं । अर्थात्, वह अमर है ।

143

ओरु ति पानय योरु ति पानय,
पानय पानस चु नु मेलान ।
ग्वडु अचेस नु मुले दॉनिय,
स्वय हा मा लि छय आश्चर ज़ान ।

आप ही उस ओर भी है और इस ओर भी । ऐसा होते हुए भी 'स्व, स्व' से नहीं मिलता । पहले तो इनमें रत्ती भर भी (कुछ) अन्तर नहीं । हे तात ! यही आश्चर्य है जिसका तुझे ज्ञानार्जन करना है ।

144

कुस हा मालि लूसुय नु पकान पकान,
कुस हा मालि लूसुय न ब्वलगान सुमीर ।
कुस हा मालि लूसुय नु मरान तु ज़ेवान,
कुस हा मालि लूसुय न करान न्यंघ्या ॥

कौन है जो चलते-चलते थक-हार न गया ? कौन है जो सुमेरु पर्वत को लाँघते-लाँघते अस्त न हुआ। कौन है जो जन्म-मरण के फेरों से नहीं हारा और कौन है जो निंदा करते बाज़ न आया ?

145

ज़ल हा मालि लूसुय न पकान-पकान,
सिरयि लूसुय न बोलगान सुमीर ।
चन्द्रम लूसुय नु मरान तु ज़ेवान,
मनुष्य लूसुय नु करान न्यंघ्या ॥

जल चलते-चलते थका नहीं। सूर्य सुमेरु लाँघते-लाँघते अस्त नहीं हुआ। चन्द्रमा मरते-जन्मते (घटते-बढ़ते) चुका नहीं और मनुष्य निंदा करते बाज़ नहीं आया।

146

नाभिस्थानस चित जलवॅनी,
ब्रह्मस्थानस शिशिरुन म्वख ।
ब्रह्मांडस छय नद वहवॅनी,
तवय तुरुन हुह हाह गव तोत ।।

नाभिस्थान में तो चिता (जठराग्नि) धधकती रहती है। और ब्रह्मस्थान (शीर्षस्थल) में शिशिर का मुख (शीत) है। ब्रह्मांड में नद (प्राणापान-रूपी नदी) प्रवाह-मान है, इसीलिए 'हूह', (प्राण) (शीर्षस्थान का शीतल श्वास) 'हाह', (अपान अर्थात् नाभिस्थान का गर्म उच्छ्वास) बन जाता है।

147

आंचार हाँजनि हुन्द गयाम कनन,
नदर्य छिव त द्ययिव मा ।
ति बूज त्रुक्यव तिम रुद्य वनन,
चेनुन छुव तु चीनिव मा ।।

आँचार झील की मछियारिन की आवाज़ कानों में पड़ी। कमल-डंठल बिकारु हैं, लेने हैं तो लो। यह बात जब बुद्धिमानों ने सुनी तो वे कहने लगे, समझने की बात यही है पर समझोगे नहीं। (इस वाख में श्लेष का आधार लेकर बात समझाई गई है- 'आंचार हाँजनि' से तात्पर्य है - आचार शक्ति और नदुरि से अभिप्रेत-नश्वर सांसारिकता है।)

148

आँचारय बिचौर्य व्यचार वोनुम,
प्राण तु रुहुन द्ययिव मा ।
प्राणस बँजिथ मज़ा चुहुन,
नदर्य छिव तु द्ययिव मा ।

आचारवली ने विचार की (चिन्तनीय) बात कही। प्याज़ और लहसुन तो नहीं लेना—श्लेषार्थ में ‘लल्ला, कहती है। प्राण और अपान (योगाभ्यास) का सौदा कर लो। “प्राणस बँजिथ, अर्थात् प्याज़ का छौंक लगाकर स्वादिष्ट सब्ज़ी बनाओ। (अध्यात्मवाद से) प्राणायाम की क्रिया द्वारा वास्तविक आनन्द पाओ। संसार नश्वर है— इसमें उलझना नहीं।

149

कुस बब तय क्वस मॉजी,
कॅमी लॉजी बॉजीबठ ।
कॉल्य गछख कांह ना बब कांह नो मॉजी,
जॉनिथ कव लॉजिथ बॉजीबठ ।।

कौन बाप और कौन माँ ? किसने तेरे साथ गठजोड़ किया ? कल को तू जाएगा, न कोई बाप होगा न कोई माँ होगी, यह जानकर क्यों लाग-लगाव बढ़ाता है ?

150

काँली सथ क्वल गछन पाताँली,
अकाँली ज़ल माल वर्षन पेन ।
मामस टॉक्य तय मसकिय प्याँली,
ब्रह्मण त चाँली इकवटु खेन ।

कालक्रम से ऐसी कुस्थिति होगी कि (दुष्कर्मों के कारण) सप्तकुल रसातल को जाएंगे। तब असमय वृष्टि हुआ करेगी। (तब) ब्राह्मण और चांडाल (कुकर्मी) एक साथ मांस-मदिरा का खान-पान करेंगे।

151

अटनुच सन दिथ थावन मटन,
लूभु ब्वछि बोलन ज्ञानुच कथ ।
फँट्य फँट्य नेरन तिम कति वटन,
त्रुक हय मालि छुख पूर कड पथ ।।

जो लोग इधर का माल चुरा कर उधर कर देते हैं और लोभ के मारे ज्ञान की बातें बखानते हैं— वे लोग दिखावा-भर करते हैं—उन्हें कुछ संचित नहीं होता। यदि तू प्रबुद्ध है तो ऐसे मामलों में पीछे हट।

152

संसारु नॉम्य तॉव तँचुय,
मूढन किछुय तावनु आय ।
ज्ञान-मुद्रा छय यूगियन किछुय,
सु यूग कलि किन्य परज़नु आय ।।

संसार नाम का तपा हुआ तवा मूढों के लिए तपाया हुआ है। ज्ञान-मुद्रा योगियों के लिए है और वह (ज्ञान-मुद्रा) योगकला द्वारा पहचानी जाती है।

153

सोबूर छुय ज़्युर मरुच तु ननुय,
खेनु छुय ट्चोठ तु खेयस कुस ।
सोबूर छुय स्वन सुन्द दूरुय,
म्बल छुस थोद तु हेयस कुस ।।

सब्र (धैर्य) ज़ीरा, मिर्च और नमक सदृश है—खाने में कडुआ। खाये तो कौन! अर्थात् कडुएपन के कारण लोग इसका प्रयोग करने में हिचकते हैं। सब्र सोने की बालिया सा है, इसका मोल ज्यादा है, खरीदेगा तो कौन! अर्थात्, धैर्य कष्टसाध्य और दुर्लभ है, इसके लिए कष्ट सहना और साधन-सम्पन्न बनना अनिवार्य है।

154

साहेब छु बिहिथ पानय वानस,
साँरिय मंगान कॅछाह दि ।
रोट नो काँसि हुंद रॉछ नो वानस,
यि च़े गछिय ति पानय नि ।।

साहिब (ईश्वर) स्वयं दूकान लगाए बैठा है। सभी कुछ-न-कुछ देने (उनसे लेने) की याचना करते हैं। (यहां) किसी की रोक-टोक नहीं। दूकान का कोई प्रहरी नहीं, जो तुझे चाहे, स्वयं ही ले जा।

155

संसारस मंज़बाग कथ शायि रोज़य,
वेज़ि परम शिव शम्भू अघूर ।
ल्वलि मंज़बाग बोय ललुनावन,
जिमरस मंज़बाग करस गूर-गूर ।।

संसार के मध्य में कहाँ किस तरह रहूँ। (यहाँ तो) परमशिव अघोर शम्भु ही रहेगा। मैं उसी को अपनी गोद में ले कर हिला-डुला लूंगी और अपने हृदय के झूले में उसे झूले झुलाऊँगी।

156

हह निशि हाह द्राव शाह क्या गव,
हहस तु हाहस शाह च्युय ज्ञान ।
रुह निशि मोर द्राव क्याह वुछुय,
क्याह रुद बाक्य क्याह गव फ़ान ॥

श्वास से उच्छ्वास निकला - यही तो साँस का आना-जाना है। 'हह', (प्राण) और 'हाह' (अपान) ही को तू श्वासोच्छ्वास मान। आत्मा से शरीर अलग हुआ तो दिखाई क्या दिया? भला (इस समय) बाकी क्या रहा, और नष्ट क्या हुआ?

157

दोद क्या ज्ञानि यस नो बने,
गमुक्य जामु हा वॅलिथ तने ।
गरु-गरु फीरुस पेयम कने,
ड्युंदुम नु कांह ति पननि कने ॥

जिस पर बन न आई हो, वह दर्द क्या जाने! गम (वेदना) का बाना तन पर धारण करके मैं घर-घर भटकी और हर जगह मुझ पर पत्थर बरसे। किसी को भी मैंने अपनी तरफ (या तरह का) नहीं पाया।

158

सुहनि हुन्द शिकार पॉज कव ज़ाने,
हाँठ कव ज़ाने पोतरु दोद ।
शमहुच क़दर लॅश कति ज़ाने,
मॅछ कति ज़ाने पोंपर्य गथ । ।

शेरनी का शिकार बाज़ को क्या मालूम । बांझ को पुत्र वात्सल्य (माँ की ममता) का क्या ज्ञान । शमा की क़द्र (देवदारु प्रजाति का काष्ठविशेष) लकड़ी को क्या मालूम ! मक्खी भला पतंगे कैसे जाने !

159

व्वथ, रॉन्य अर्चुन सखर,
अथि अलपल वखुर ह्यथ ।
योदवय ज़ानख परम पद,
अक्षर हि शीखर खेय शीखर ह्यथ । ।

उठ देवी ! पूजा की तैयारी कर ! पूजा की सम्पूर्ण सामग्री हाथ में ले । यदि परम-पद अक्षर को जान लोगी तो तान्त्रिक क्रियावन्तों के साथ बैठकर उसका सेवन कर ।

160

लॅराह लॅज़म मंज़ मॉदानस,
अँद्य अँद्य वॅरिमस तँकियु तु गाह ।
स्व रोज़ि यँत्य तय ब्व गछु पानस,
वोन्य गछि वानस फालव दिथ ।।

मैदान के मध्य में मैंने एक भवन निर्माण किया । उसको चारों ओर से मैंने यथेष्ट रूप से संवारा-सजाया । वह (भवन) यहीं रह जाएगा और मैं चली जाऊँगी । मानो दूकानदार दूकान बड़ा कर चला गया हो ।

161

स्वयि कुल नो द्वद सुत्य सँगिजि,
सर्पिनि ठूलन दिज़ि नो फाह ।
स्येकि शाठस फल नो वँविज़ि
रावँरिज़ि नु कोम-याजन तील ।।

बिच्छू घास को दूध से सींचना नहीं, सर्पिणी के अण्डों को कभी न सेंकना । बालू के पुलिन पर बीज न बोना, भूसी की नान खताई पर तेल बर्बाद न करना ।

162

मूढस ज्ञानुच कथ नो वॅनिजि,
खरस गोर दिनु राविय दोह ।
युस युथ करिय सु त्युथ स्वरे,
क्रेरे वॅरिजि न पनुन पान ॥

मूढको ज्ञानोपदेश न करना । गधे को गुड़ देने से तुम्हारी मेहनत अकारथ जाएगी । जो जैसा करे, वह वैसा भरे । तुम्हें अपने-आपको कुएँ में धकेलना नहीं चाहिए ।

163

ऑरस नेरि नु मोदुर शीरय,
न्यर्वीरस नेरि न शूरा नाव ।
मूर्खस परुन छुय हॅस्तिस कशुन,
यस मालि दांदस ब्यहा च़ाव ॥

आलबुखारा में से मीठा रस नहीं निकलता । निर्वीर्य शूर नहीं बन सकता । मूर्ख को समझाना हाथी को खुजलाना है, अर्थात् बेकार है । जिस बैल को सुस्ती और आलस्य ने धर दबाया हो, वह काम से गया ।

164

बबरि लंगस मुशुक नो मोरे,
हूनि बस्ति कोफूर नेरि न ज़ांह ।
मनु योद गारहन फेरिय ज़ेरे,
न तु शालदुंगे नेरिय क्याह ।।

रेहान (मरवाहे) की शाखा से सुगन्ध कभी नहीं जाती। कुत्ते के चमड़े से कपूर की सुवास कभी नहीं आ सकती। यदि तू उस (परमपद अक्षर) का ध्यान मन से करे तो वह सहज ही (तेरी ओर) घूमेगा। नहीं तो गीदड़ की तरह चिल्लाने मात्र से कोई लाभ नहीं।

165

तेम्बुर पेयस कव नो च़ॉजिन,
मस-रस कव अह नॉजिन गव,
शान्त्यन हँज़ क्रय तोलु म्वलु वॉजिन,
अँदुर्य गाह येलि न्यबर प्योस ।।

एक चिंगी भर उस पर पड़ी, पर अफसोस, वह सह न पाया। मधुरस क्यों उसकी नाड़ियों (वातनलिका)में गया, जिसका उसे कोई लाभ नहीं हुआ। अर्थात्, उसकी क्षुधा ज्यों-की-त्यों बनी रही।

(पाठभेद) मन्सूर को अध्यात्म-बोध की तनिक-सी आभा मिली, पर वह उसे सहन न कर सका।

(ऐसे मनुष्य ने) संतों (सन्त जनों) की क्रिया का आदर-मान ही घटा दिया, क्योंकि भीतर का प्रकाश उसके अन्तर से बाहर निकल आया।

लल देदः शखसियथ तु वाख

- रूप कृष्ण भट

लल देद यस कौशिर्य मायि तु आदर सान ललु मॉज ति वनान छि, ज़ायि च्वदौहिमि सँदी हुंदिस दौयिमिस दँहिलिस मंज पांदरेठन गामस मंज। पांदरेठन छु पांपरस तु सिरीनगरस दरमियान वाका। असुंद ल्वकचार ओस अँकिस आम फँहम बटु कोरि हुंद ह्युव। अँमसि आयि धारमिक ग्रंथन तु संस्कारन हुंज तौलीम दिनु। असुंद ग्वर ओस अख पोरमुत ल्यूखमुत तु योगी ब्राह्मण श्री सिदु श्रीकन्ठ यस आम पाँठ्य सेदु बोय ति वनान आँस्य। अँमिस ग्वर सुंद असर छु लल देदि हुंदिस ज्ञातस तु कलामस प्यठ टाकारु पाँठ्य नोन। तमि वखतुकि दोस्तूर मूजब आव ललि ल्वकचारस मंजुय पांपरु खांदर करनु। कर्मलो न वँन्यतव या तकदीर ललि पूरयोव नु ग्वडु द्दु प्यठय वॉरिवि। लल यीचाह गाटुज, वेदवान तु संस्कौरी आँस, त्यूतुय मूर्ख, वुकुर तु त्रुकुर आँस तसुंद खान्दार (बरथा)। तसुंज हश ति आँस स्यठाह ज़ॉलिम तु बेवकूप। ल्याहजा आँस्य तिम दूशवय माजि पँथुर ललि कथि - कथि प्यठ तंग करान। ललि हुंदिस गाटुजारस तु ह्वनरस आयि नु वॉरिव्य गरस मंज कांह कदुर करनु। वॉरिव्यन हुंदि जुलमु तु सितमु बावजूद ति रुज लल पनुन्य जिमुवौरी बा ज़ॉबितु पाँठ्य निबावान। स्व आँस गरु बारुच कॉम करान तु फालतू वखतस मंज ज्ञानस तु योगस मंज लीन रोज़ान।

वॉरिव्य गरस मंज यिम सितम तु जुलुम ललि चॉल्य तिमन मुतलक छे वारयाह मशहूर काहवँच तु कुसु। दपान अँमिस आँस नु हश बतु ति पूर दिवान। स्व आँस ललि हुंदिस थालस मंज निलु वठ थवान तु प्यठ आँसुस बतु शेरान युथ ज़न यि वारयाह बासिहे। लल आँस बतु खेवान तु यि नीलु वठ छँलिथ वापस चोकस मंज थवान। अथ कुसस सुत्य छे अख मशहूर काहवथ वाबस्तु। “हौंड मॉर्यतन या कठ, ललि निलुवठ चलि नु ज़ांह।” युथुय अख ब्याख कुसु छुः दपान लल आँस पोन्थ अननु खौतरु यारबल वँछमुच। तति लँज यारबल काकन्यन सुत्य कथ बाथ करनि। वख लोगुस चोर पहन। ह्वपौर्य बैर्य असुंजि हशि नेचिविस कन जि कर छे द्रामुच तु वुनि छेनु नँनी। रुन आव तौशस लायिनु। युथुय लल पाँ नोट ह्यथ गरु च़ायि। असुंघ रुन्य तुल डंडु तु छेवुन अथ नँटिस। नोट फुट मगर पोन्थ रुद तमी ताहु ललि हुंदिस फेकिस प्यठ। ललि बैर्य गरिक्य साँरी बानु पानि सुत्य तु युस पोन्थ बचोव सु त्रोवुन दारि किन्थ न्यबर। येतिनस यि पोन्थ प्योव तति नस बन्योव अख नाग। अथ प्योव ललु त्राग नाव। दपान यिछ्य हिशि करामँच बूजिथ तु वुछिथ आँस्य लूख दूरि दूरि प्यठु ललि हुंद दरशुन करनु खौतरु यिवान। लूकन हुंद चँसिथ यिनु किन्थ तु वॉरिव्यन हुंदि जुलमु सुत्य तंग यिथ त्रोव ललि गरुबार तु गँयि दयि नावस सुत्य मुकमल पाँठ्य लीन। स्व आँस व्वन्य पनुनिस ग्वरस सेदु बाँयिस सुत्य गंटु वादु रुहौनियतस आवागमनस तु धर्मारथस प्यठ बहस करान। सवाल-जवाब करान। अँथ्य दोरान ह्यँच ललि शौथिरी करुन्य तु असुंदिस स्वखनस तु दँपिस प्यव ललु वाख नाव। वाख फॉलेयि नारुक्य पाँठ्य शहरु गाम तु लल गँयि तीचाह मकबूल जि फखरु तु आदर सान आँस्य अँमिस

लूख लल देद या ललु मॉज वनान ।

सर रिचॉर्ड टेम्पुल (Sir Richard Temple) छि पनुनि किताबि (The Word Of Lalla) मंज लेखान जि ललेश्वरी हुंघ वाख छि कॉशिर्यन हुंजि दूहदिशचि जिंदगी हुंद अहम हिस् बनेमुत्य । तसुंघ वाख छि थदि पायिक्य रूहॉनी । मँदुर्य, पुर व्मेद तु आम इनसानु सुंजि जिंदगी हुंघ तरजुमान । सर जार्ज ग्रियरसन (Sir George Grierson) छि पनुनि किताबि लल वाकियां (Lal Vaakyani) मंज लेखान जि दुनियाहस मंज आसि खाल खालुय कांह ज़बान यथ मंज कांह रूहॉनी शॉयिर यूत मकबूल गोमुत आसि यीच ज़न लल देद गॉमुच छे ।

दरअसुल छे लल देदि हुंज शॉयिरी (वाख) तीचाह दमदार तु पुर माने जि लगबग शैयव हतव वॅरियव पतु ति छे यि तीचुय मकबूल यीचाह तसुंदिस दोरस मंज ऑस । हालांकि कॉशिरि ज़बॉन्य मंज छु ललि ब्रॉह ति वारयाह कैह लेखनु आमुत मसलन “छुम पद” या “महानय प्रकाश” मगर अदबी तवारीखदानन हुंद मानुन छु जि कॉशिरि अदबुक या कॉशिरि शॉयिरी हुंद तवारीख छु दरअसुल लल देदि प्यठय शोरू गछान । बकोलि शफ़ी शौक “लल देद यीचाह नामावार तु कदावार शखसियत सॉनिस अदबी तॉरीखस मंज छे, तीचुय छे तसुंज जिंदगी मशरफुक्यन परदन छायि । कॉशिर्यन छे पतुवथ तस सुत्य अँकीदत रुजमुच तु अँकीदतमँदी किन्य छे स्व अख नीम दास्तानवी किरदार बनेमुच ।”

लल देदि मुतलक छु सारिवुय खोतु प्रोन हवालु नुन्दु रेशुन । तँम्य छु लल देदि मुतलक ल्यूखमुत :-

तस पदमान पोरिचि लले
येमि गलि गलि अमरेथ चोव
स्व सॉन्य अवतार त्वले
तिथिय वर मे दितम दिवो । ।

पनुन्यव वाखव किन्य दिच ललि आम लूकन खासकर मज़लूम ज़नानन ज़ेव । स्व ऑस ज़नानन हुंदि ताकतुक (Women's empowerment) तरजुमान । वुछिव तसुंद यि वाख:-

आमि पनु सौदरस नावि छेस लमान,
कति बोज़ि दय म्योन मे ति दिदि तार ।
आम्यन टाक्यन पोन्थ ज़न शमान,
जुव छुम ब्रमान गर गछुहा । ।

बकोलि गुलशन मजीद “लल देद तु लल देदि हुंज शॉयिरी छे सानि लुकु रेवायँच हुंद अख अछ्यन हिस् । लुकु रेवायँच हुंदि वँसीलय वाँच असुंज शॉयिरी असि निश कुसतन मंज ।”

अमर मालमूही छि लेखान :- “लल देद ऑस नु कॉशीरि हुंद शिव फलसफुय योत ज़ानान तस ऑस हिन्दोस्तॉन्य फलसफुक्यन शैववुन्य वेसतानन हुंज ज़ान यिमन वँशीरि हुंघ शिव फलसफन बोद्ध मतकि फलसफु सान व्यूर ओस तुलमुत ।”

शेशी शेखर तोशखॉनी छि लेखान :- “लल देद छे नु सिरिफ रूहॉनियत किस औरूजस प्यठय योत रूजमच। तसुंघ खवर छि जमीनि प्यठ पूर पॉठ्य ठिकरिथ। स्व छे नु रूहॉनियतस या रेशितिस आम ज़िंदगी निश अलग कॅरिथ वुछान। आम ज़िंदगी हुंदि ल्वह लंगरु निशि दूर रोजनु बजायि खोर तमि पनुन पान अख आम ज़िंदगी गुजारनु बावजूद ति रूहॉनियतकिस अरशस तु प्रॉवुन मुखती। यथ ज़न त्रिकु शास्तरु हिसाबु “मनमशा शखती” या “स्वतनतरा” या मुकमल आजॉदी वनान छि। व्यवहय गव शिव सुंद स्वरूप ति।”

लल देदि प्यठ यिमव वेदवानव कॉम कॅरमुच छे तिमन मंज छि जिया लाल कौल, बी आर पारिमू, नीलकण्ठ कोत। आर एन कौल, बी एन सोपूरी, जवाहरलाल भट तु बिमला रैना सरस। युहुंद द्युत छु कॉबिलि तॉरीफ। अमि अलावु छु कौशुर समाचार लल देदि नंबर ति नाव हेनस लायख तु बाक्य वारयाह अँदीब क्यो तहकीककार यिमव लल देदि प्यठ कॉम कॅरमुच छे। सॉन्य मूजूद दोरुच शॉयिर बिमला रैना ख्यस लल देदि हुंदिस तॅरीकस प्यठ लेखान छे तस यिमन लफज़न मंज श्रदांजली अरपन करान :-“लल देद छे कॅशीरि हुंजि संस्कृती हुंज असली पहचान। मज़हब, फिरकु तु जॉच हुंघव तफरीकव निशि मुबरा। तु स्यठा बुलंद कदामत शखसियथ।”

कॉशिरिस अदबस मंज येम्युक बाड़व लग बग सतन हतन वॅरियन प्यठ फुलिथ छु, छु आलमी बॉय बरादरी हुन्द जज़बु रोज़ि रोशनुक्य पॉठ्य ताबान तु नुमायान। वारयाहव अँदीबव छे बिला मज़हब मिलत अथ जज़बस ज़ेव दिचमुच तु यिथु कन्य छु इनसॉन्यतस कॉशिरि अदबुक अख व्योद तु टाकारु द्युत। अमि जज़बुच शरूआत छे लल देदि हुंदि सुती सपदान। अमि पतु ति छु अदबु क्यन मुखतलिफ दोरन मंज चाहे सूफी शॉयिरन हुन्द दोर छु, मसनवी तु मरसिया लेखन वाल्यन हुन्द दोर छु या मूजूद दोरुकय अज़ीम शॉयिर महजूर, तु आज़ादिन अलावु ति छे वारयाहव अदीबव यि परम्परा कॉशिरिस अदबस मंज अपनॉवमुच तु पॉरॉवमुच। कॅशीरि हुंजि सर ज़मीनि प्यठ छि बटु शॉयिरव नात लीखिथ तु मुसलमान शॉयिरव बॅखती शॉयिरी लीखिथ दुस्तिस आलमस बॉय बरादरी हुंज वथ हॉवमुच।

हरगाह अँस्य लल देदि हुन्द कलामु गोरु सान वुछव, तसुंज शॉयिरी ऑस नु शॉयिरी बरायि शॉयिरी। वाख बनेयि तसुन्द गुफतार। वाख वॅनिथ कॅर तमि कॉशिरिस अदबस मंज अख नॅव रेवायथ तु परमपरा कॉयिम। वाख ऑस्य लूकन ताम पॅज वथ तु पज़र वातनावनुक्य वसीलु। ललि ऑस जिन्दगी अँकिस आम इनसानु सुंघ पॉठ्य जुवमुच तु करीबी तोर परखॉवमुच। तसुंघ जज़बात ऑस्य अँकिस आम इनसानु सुंघ जज़बात। तसुंदिस कलामस मंज युस दूख या दरुद, उफ तु वाय, परेशॉनी, लाचॉरी तु बेबसी ऑस स्व ऑस अँकिस आम इनसानु सुंजुय, मगर तसुन्द नज़रिया, तसुन्द तजरुबु तु इज़हारि खयाल ऑस्य अँकिस ग्वनमातु सुंघ। चिनांचि मीज्य तसुंघन वाखन बिला इमतियाज़ि मज़हब मिलत प्रथ कॉसि इनसानु सुंदिस दिलस मंज जाय तु तमि कॅर अँकिस इनसानु सुंज पॉरवी न कि कॉसि खास मज़हब किस या ज़ातु किस इनसानु सुंज। व्यवहय न्वक्तु नज़र तु थोद सॉच छु तस कॉशिरिस अदबस मंज अख त्युथ बजर तु थज़र बखशान युस खालुय कॉसि प्रोवमुत छु। कमाल छु यि ज़ि

तसुन्द कलामु छु सतव हतव वरियव पतु ति त्यूतुय पुर असर तु बा माने यूत यि अज़ ब्रॉह सथ हथ वरी ओस तु तसुंद्य वाख छि अज़ ति तमाम लूकन हुंदि बापथ वतु हावुक्य क्यो पुर इलहाम साँबिथ सपदान।

लल देदि मुतलक छु मशहूर यूपी ऑलिम सर रिचॉर्ड टेम्पल पनुनि किताबि “The Word of Lala” मंज़ लेखान:-“The Vakhs of Laleshwari have beocme part of the day to day conversation in Kashmiri households. Her religion is not bookish. Her religion is a mix of peoples' hopes and miseris. Her Vakhs are of high standard, spiritual, brief, to the point, sweet, full of hope, lively and representative of the status of common man.”

याने: लल देदि हुंद्य वाख छि गरु गरु वॉतिथ लुकन हुंदि आम बोल चालुक्य हिसु बनेमुत्य। तसुन्द मज़हब छु नु किताँबी। तसुन्द मज़हब छु लूकन हुंज़ मिलि मिशि व्वमेज़ु क्यो तकलीफ। तसुंद्य वाख छि थदि मयारुक्य, रूहॉनी, म्बखतसर, मँदुर्य, पुर उमेद, ज़िंदु दिल तु आम इनसानु संज़ हालथ बयान करुवुन्य। तमी छि हेकान अँस्य वोसूकु सान वँनिथ ज़ि पनुनिस पसि मनज़रस तु पेश मनज़रस मंज़ छि वाख इनसॉनी बरादरी, बॉय बंदुत, जान्यर तु खँदमति खलकुक जज़बु व्वतलावान। वाखन हुंज़ि महावरानु अहमियँच किन्य छि तिम सतव हतव वँरियव पतु ति लूकन मंज़ मकबूल।

सर जार्ज ग्रेरसन छि पनुनि किताबि “लल वाखियानी” मंज़ लल देदि हुंदिस कलामस मुतलव यिथु कन्य पनुन इज़हारि खयाल करान:-“ There would hardly be a language in the world which would match the popularity of sayings of saint, poets or poetesses to those of Lal Ded in Kashmir.”

याने: दुनियाहस मंज़ आसि खालुय कांह ज़बान स्व यथ मंज़ ज़न शॉयिरन या ज़नानु शॉयिरन हुंद्य तीत्य मकबूल महावरु या दँप्य आसन यिम ज़न लल देदि हुंदि कलामुक मुकाबलु वँरिथ हेकन।

यि छु लल देदि हुंदि कलामुक कमालुय ज़ि सतव हतव वँरियव हुंदि तवारीखु पतु ति, यथ दोरान वँशीरि मंज़ कम कम सियाँसी, इकतिसाँदी, तु समॉजी ब्वहरान आयि ति आयि नु अँमिकिस तलफुज़स तु मतनस तीचाह ज़्यादु फरख ज़ि अम्युक माने चारुन क्यो गछि मुशिकल। ल्याहज़ा छि तसुंद्य वाख अँज़िकिस इनसानस ति तीचुय रहबरी करान यीच ज़न तमि दोरु किस इनसानस करान आँस्य, यथ मंज़ यिम वनुनु आयि। तसुंद्यन वाखन मंज़ यिमु ति कैह करामँच अँज़िकिस दोरस याने कलियवगस या यथ अँस्य आँखुर ज़मानु ति वनान छि, मुतलक करनु आमचु आसु, येलि तिमु पज़ु द्रायि लूकन बड़चोव तस प्यठ ज़्यादय अकीदु तु पछ ज़ि पज़ी छे स्व थदि पायिच ग्वनमाथ आँसमुच। बँल्कि ख्वदायि सुंदि तरफु चारनु आमचु अख मुरशिद य्वसु लूकन मंज़ तस प्यठ पछ दँरुावनु तु तिमन रुच वथ हावनु खॉतरय ज़नमस आमचु आँस।

तसुन्द दोप ज़ि ख्वदा छु इनसानस रुमस रुमस मंज़ बँसिथ तु सु छारनु बापथ छु नु मँशीदन तु मंदरन मंज़ गारनुक ज़ौरुथ, बन्योव आम लूकन हुंदि खॉतरु न्यँदरि मंज़ बेदार

लल वाख

गछनुक सँबीलु। स्व ऑस इनसानस मज़हब किस बुनियादस प्यठ अलग करनस खलाफ तु तमि द्युत तिथ्यन अनसरन क्यो मज़हब क्यन ठेकदारन अख चलेंज यिम ज़न इनसानन दरमियान मज़हब, ज़ात पात, तु फिरकु परसती हुंदिस बुनियादस प्यठ ब्यन करान ऑस्य।
बुछिव तसुन्द यि मशहूर वाख:-

शिव छुय थलि थलि रोज़ान,
मव ज़ान बटु तु मुसलमान।
त्रुक हय छुख तु पान प्रजुनाव,
स्वय छय साहिबस सुत्य ज़ान ॥

या यि वाख नीतोन:-
दीशि आयस दशि दीशि चॅलिथ,
चॅलिथ चोटुम शुन्य अदु वाव।
शिवय अदु डयूंतुम शायि शायि मील्लिथ,
शे तु त्रे त्रुपरिमस तु शिवुय द्राव ॥

लल देदि छु नु कुनि जायि ति ह्यौद लफ़ज़ इसतिमाल कोरमुत। बॅल्कि छुन प्रथ शायि बटु लफ़ज़ुय वरतोवमुत।

येतिनस छे यि कथ करन्य लॉज्यमी ज़ि ललि सुत्य मनसूब लग बग ड्वडस हतस वाखस मंज़ छु तमि सिर्फ अथ अँकिस वाखस मंज़ स्येदि स्योद दून कोमन हुन्द नाव ह्योतमुत। याने बटु मुसलमान। पनुन कुलहुम कलामु छु तमि मज़हबी या ज़ौं च हुंज़ फरख करन वरौय स्येदि स्योद अँकिस आम इनसानस कुन रोजू कोरमुत। आर के पारिमू हन छु पनुनि किताबि A History of Muslim Rule in Kashmir 1320-1818 मंज़ ल्यूखमुत:-

“She is the earliest known social and educational reformer of Kashmir. She preached against the existing social Hindu drawbacks. She preached harmony between vedantism and sufism, good Hindu and good Muslim.”

स्व छे कॅशीरि हुंज़ सारिवुय खोतु प्रॉन्य समौजी तु तौलीमी रिफारमर। तमि तुज तमि वखतुवयन बटन मंज़ समौजी बिदतन खलाफ आवाज़। तमि दिच लूकन वेदांतस तु सूफी सौंचस दरमियान हिशरुच तु बरादॅरी हुंज़ तौलीम। जान हयॅद तु जान मुसलमान कोडुन बदि।

वारयाहन ऑलिमन हुन्द वनुन छु ज़ि यिमन दून फलसफन दरमियान कॅर ललि हिशरुच तु म्युल करनुच पॉरवी तु य्वहय छु तसुंद सौर्यसुय आलमस अख बोड द्युत। जिया लाल कौल सुंदि मुताबिक ओस च्वदौहिमि सॅदी हुन्द दोर कॅशीरि मंज़ उथल पुथलुक तु तबौही हुन्द दौर यथ मंज़ वारयाह सियाँसी, समौजी तु मज़हबी तबदीली रोनुमा सपुज़। हालाँकि ललि हुंघन वाखन मंज़ छु नु तिमन हालातन हुन्द स्येदि स्योद ज़िकिर मगर गॉर जॉनिबदारानु तोर छे स्व तिथ्यन वाकन हुंज़ बावथ करान। मसलन:-

नॅशेब्द अख बुछुम वाज़स मारान या
गाटुला अख बुछुम ब्वछि सुत्य मरान

अथ मंज्र छु नु कांह शख ज़ि पनुन्यव वाखव ज़ेरियि द्युत तमि लूकन मंज्र बाँय बरादरी बडावु तु लूकन दरमियान कुनि ति कुसमुक दोग्यन्यार पौदु करनस चाहे ज़ात पात आसि, या मज्रहबी तक़रार, तथ वॅकरुन मज्रमथ ।

तसुन्द यि दोप:- “अनस खेनस क्या छुम दूश ।” छु अथ कथि साँबिथ करान ।

लल देद न आँस अख समोजी कारकुन, न मज्रहबी लीडर, तु न अख सॅन्ययॉस्य । स्व आँस अख आम ज़नान येमि तिम तमाम समोजी रिशतु तु अयाम निबाँव्य यिम अँकिस आम ज़नानि हुँदि बापथ लॉज्यमी आँस्य । मगर पनुनि ताँलोम तु तरबियत किस बिनाहस प्यठ तु पनुनिस ग्वर सुँदिस वनुनस प्यठ पॅकिथ तु पनुनि तपस्या, सादना तु कर्मु किस बुनियादस प्यठ प्रोव तमि रूहॉन्ययतुक सु मुकाम यथ ब्रॉटु कनि लूकन मंज्र मज्रहबी ब्यन, फिरकु परसती या कुनि ति कुसमुकिस समोजी तक़रारस कांह वुकथ या बुनियाद रूज़ नु । नतीजन गॅयि तसुँद्य वाख मकबूलि आम । तिम अपनॉव्य हँद्यव ति तु मुसलमानव ति । यिमन वाखन मंज्र लोब लूकव बाँय बरादरी तु अमनुक पाँगाम । रूहॉनी सकून तु ज़िंदगी बा मकसद तु बा माने गुज़ारनुक सबख ।

बमुताबिक दिलीप चितरे ओस ललि मंज्र दरवेशि तु शाँयिरी हुन्द रुत तु थदि पायुक म्युल । येमि किन्य स्व अख ला जवाब शखसियत बनेयि । ललि मंज्र रूहॉन्ययतुक सु थज़र तु इनसाँनी कदरन हुन्द बजर छु यिमन वाखन मंज्र दीदमान:-

ग्वरस प्रुछुयोम सासि लटे,

यस नु कैह वनान तस क्या नाव ।

प्रुछान प्रुछान थँचिस तु लूसस,

कैहनस निश क्याहताम द्राव ।।

आयस वति तु गॅयस वति,

सेमंज्र स्वथि लूसुम द्वह ।

चंदस वुछुम हार नु अति,

यथ नावि तारस दिमु क्या बो ।।

अँसी आँस्य तु अँसी आसव,

असी दोर वॅर्य पतु वथ ।

शवस सोरि नु ज्योन तु मरुन,

रवस सोरि नु अतु गथ ।।

लल देदि हुँजि नज़रि मंज्र छे ज़िंदगी अकि दॅर्ययावुक्य पाँठ्य मुसलसल पाँठ्य पकान रोज़ान यथ मंज्र ज़न तॅमिस ला शोऊरस सुत्य म्युल सपदनुक जुसतजू मँज़िलस कुन पक़नस मजबूर करान छु । तु तस सुत्य म्युल सपदनुय छु ज़िंदगी हुन्द मकसद ति तु पज़र ति ।

बमुताबिक शफ़ी शौक़ तु नाजी मुनवर “लल देद यीचाह नामवर तु कदावर शखसियत साँनिस अदबी तवारीखस मंज्र छे तीचाय छे तसुँज्र ज़िंदगी मशरफ़क्यन परदन छाथि । काँशियन

छे पतु वथ तस सुत्य अँकीदथ रुज़मुच्च तु अँकीदतमंदी किन्य छे स्व अख नीम दासतानवी किरदार बनेमुच्च ।”मशहूर सूफी शाँयिर शमस फकीर छु यिमन शारन मंज़ लल दैदि खराजि अकीदत पेश करान ।:-

ज़ानुवन्य ज़ान कर प्रानस ग्यानस,
ज़ान मिलनाव भगवानस सुत्य ।
पूजायि करनि गँयि मंज़ करमु वानस,
धर्म शास्तरनिस बुत खानस ।
कौर ललि यिकवटु आकाश प्रानस,
ज़ान मिलनाव भगवानस सुत्य ।

सारिवुय खोतु बोड खराजि अकीदत छु शेखुलआलम पानु तस यिमन शारन मंज़ पेश करान:-

तस पदमान पोरचि ललि,
येमि गलि अमरेत चोव ।
स्वय सौँन्य अवतार ल्वले
तिथ्य वर मे दिम दीवो ।।

सैंटर आफ कश्मीरी लैंग्वेज लिटरेचर एंड क्लचर (आल इंडिया कश्मीरी समाज) नई दिल्ली

Monographs (Published and Proposed)

1. नुंदु रेशिन्य श्रुक्य, तरतीब तु तशरीहः संतोष 'नादान', २०१५ रु १००
2. ललु वाख, तरतीब तु अनुवादः शम्भुनाथ भट्ट 'हलीम', २०१६ रु १००
3. शुर्य कथु, तरतीब तु अनुवाद शम्भुनाथ भट्ट 'हलीम' तु ओमकार कौल.
4. शुर्य लयि तु बॉथ (सॉबरन)
5. कॉशिर सूफी शॉयरी (सॉबरन)
6. कॉशिर लीला शॉयरी (सॉबरन)
7. कॉशिर्य रसुम तु रेवायँच
8. कॉशिर्य अफसानु (सॉबरन)
9. मास्टर जिंदु कौल (शारु सॉबरन)
10. दीनानाथ नॉदिम (शारु सॉबरन)

An Encyclopedia of Kashmiri Language, Literature and Culture (To be available online)

The CKLLC is grateful to the following for their generous donation to the Centre:

1. Prof Braj B Kachru, University of Illinois at Urbana-Champaign, USA
2. Sri Moti Kaul, Former President AIKS
3. Prof Sudhir K Sopori, Former Vice-Chancellor, Jawaharlal Nehru University, New Delhi

शम्भु नाथ भट्ट 'हलीम'

श्री शम्भु नाथ भट्ट 'हलीम' ज़ायि अरुह (कुलगाम), कॅशीरि 1924 ईस्वी मंज। यिमव छु बी ए, प्रभाकर तु साहित्य रत्न कोरमुत। यिहुंद पेशु छु सहाफत तु ब्राडकासिटंग रूदमुत। यिम ऑस्य आल इंडिया रेडियोकिस कॉशिरस खबरु शोबस सृत्य वाबस।

यिमन छे ग्वडु पेटय लेखनस परनस सृत्य दिलचस्पी रूजमुच। यिमव छे वारयाह किताबु लेछमचु तु तरजमु कॅर्यमित्य। यिहंजन किताबन मंज छे शॉमिल वैथि हुंघ आलव, (कॉशिर शारु सॉबरन, 2002), व्यनु पोश (लीलायि सॉबरन तु महिम्नापारुक कॉशुर तरजमु 2010), ज़िंदगी रूठे नहीं (उर्दू शारु सॉबरन 2010). बालु यार, (शुर्य अदब)। यिमव छि कॉशिरस, उर्दूहस तु हिंदी ज़बॉन्य मंज. वारयाह तरजमु कॅर्यमित्य। यिम छि पम्पोश, कॉशुर समाचार (कॉशुर बोग) मेगज़ीनन हुंघ एडिटर ति रूद्यमित्य।

यिमन छि वारयाह यनामु तु एवार्ड मीलिमित्य, मसलन बालु यार किताबि पेट भारत सरकारुक यनाम, कश्मीर पर हमला उनवानस पेट हिंदी तालीफ तु तरतीब एज़ाज़, सौहार्द सम्मान (उत्तर प्रदेश सरकार), शारदा सम्मान (आलमी कश्मीर पंडित कांफ्रंस), समप्रति सम्मान (समप्रति जम्मू), कृष्ण जू राजदान सरस्वती सम्मान (जम्मू कश्मीर विचार मंच), तु KECSS एवार्ड।